

# हज्ज



# व



# ज़ियारत

मुसन्निफ़

अअ़ला हज़रत मुजद्दिदे दीन-ने मिल्लत इमामे अहले सुन्नत  
मौलाना अशशाह अल्हाज मुफ़्ती मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ान  
रदियल्लाहु तआला अन्हु

नाशिर

रज़ा अकेड्मी

२६, कांबेकर स्ट्रीट, मुंबई - ३

हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना

अरे सर का मौक़अ है ओ जाने वाले

अनवारुल बशारति

फ़ी

मसाइलिल हज्जे वज़ि़यारति

मुसत्रिफ़

अअ़ला हज़रत मुजदिदे दीन-ने मिल्लत इमामे अहले सुन्नत  
मौलाना अशशाह अल्हाज मुफ़्ती मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ान  
रदियल्लाहु तआला अन्हु

बफ़ैज़

ताजदारे अहले सुन्नत शहज़ाद-ए-अअ़ला हज़रत  
हुज़ूर मुफ़्ति-ए-अअ़जम हिन्द रदियल्लाहु तआला अन्हु

हस्वे फ़र्माइश

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी  
दामत बरकातुहुम आलिया

हिन्दी कर्ता

मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी (बी. ए.)

नाशिर

रज़ा अकेड्मी

२६, कांबेकर स्ट्रीट, मुंबई - ३

सिलसिलए इशाअत नं. २०९

**जुम्ला हुक्क बहक्के नाशिर महफुज**

नाम किताब :- **हज्ज व जिियारत**

(अनवारुल बशारति फ़ी मसाइलिल हज्जे वज्जियारति)

मुसन्निफ़ :- इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहूमा

सफ़हात :- १२०

नाशिर :- रज़ा एकेडमी २६, कांबेकर स्ट्रीट, मुंबई - ३

मतबअ :- रज़ा आफ़सेट, मुंबई - ३

तअदाद :- एक हज़ार

सने इशाअत :- १४१८ हिजरी ---- १९९८ ई.

पुरुफ़ रीडिंग :- मौलाना मुहम्मद असलम रज़ा मिस्बाही

मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी (बी. ए.)

**:- मिलने के पते :-**

❁ क़ादिरी बुक डिपो बरेली शरीफ़ ❁

सिल्वर बुक डिपो मुंबई

❁

नाज़ बुक डिपो मुंबई

इकरा बुक डिपो मुंबई

❁

फ़ारुक़िया बुक डिपो देहली

रज़वी किताब घर देहली

❁

मक्तवा जामे नूर देहली

## पेशे लफ़्ज़

हज़रत अल्लामा क़ारी मुहम्मद मुस्लेहउदीन साहिब सिद्दीक़ी मद ज़िल्लहु

ये रिसाल-ए-मुबारिका अलमुसम्मा व अनवारुल बशारति फ़ी मसाइलिल हज्जे वज़्ज़ियारति, इस से पहले हिन्द व पाकिस्तान में कई बार छप चुका है। इस की मक़बूलियत का ये आलम है कि इधर छपा और उधर हाथो हाथ निकल गया और इस कि मांग में दिन-ब-दिन इज़ाफ़ा होता जा रहा है। हक़ीक़त ये है कि इस रिसाल-ए-मुबारक-न में मसाइले हज्ज-ने ज़ियारत मुस्तनद तरीक़े पर जमअ किये गए हैं। और इख़्तिसार को मद्देनज़र रखा गया है। सफ़रे हज्ज-ने ज़ियारत के कई मराहिल-ने मनाज़िल होते हैं। इन मसाइल की तर्तीब-ने तद्वीन इस ख़ुबी से की गई है कि जिस मसअला को देखना हो, उसी बाब में मिल जाता है। जो उसके लिए क़ायम किया गया है। इबारत निहायत वा वक़ार, ज़ामेअ और क़ुरआन-ने हदीस-ने फ़िक़ह की इस्तिलाहत पर मुश्तमिल है। हरमैन तय्येबैन के मुसाफ़िर के लिए बेह्तरिन मुअल्लिम-ने रहनुमा है। मक़ामाते मुक़दिसा का अदब सिखाता है और अरकाने हज्ज की अदायगी के वक़्त जो कैफ़ियत एक हाजी के दिल में होनी चाहिए उसकी निशानदही करता है। ग़रज़ ये कि ज़ाहिरी व मअनवी एअ्तवार से ये एक बेह्तरिन तोहफ़ा है। इस रिसाल-ए-मुबारका को इस सदी के मुजदिदे बरहक़ इमाम अह्ले

सुन्नत हज़रत शाह अहमद रज़ा खाँ फ़ाज़िले बरैलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने तस्नीफ़ फ़रमाया। जिनकी जलालते इल्मी को उनके मुखालफ़ीन भी तस्लीम करने पर मजबूर हुए। जिनका शोहरा आलमगीर है। आप की तस्नीफ़ क़र्दा किताबों की तअ़दाद एक हज़ार से ज़्यादा है। आप के पास अक्नाफ़े आलम से सवालात आते थे और आप अपनी मजालिस में मुतअद्दिद मुहर्रिरो को बिठाकर व नफ़से नफ़ीस जवाबात तहरीर कराते थे। हिन्दुस्तान का वायसराय भी हैरान होकर ये कहा करता कि जितनी डाक हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहिब के पास आती है वो तो मेरे पास भी नहीं आती। बअज़-बअज़ सवालात पर तो रिसाले तस्नीफ़ फ़रमा दिए जो चार सौ और पाँच सौ सफ़हात पर मुश्तमिल हैं। ओलमा अंगुशत बदन्दौ हैं कि अअ़ला हज़रत जिस मसअ़ला पर क़लम उठाते हैं तो फिर क़लम नहीं रुकता। उलूम के दरिया बहाते हैं। ओलमा व सलफ़ की तहरीरों को बतौर सनदे इस्तिशहाद पेश करने के बाद, क़ालरज़ा, कहकर मसाइल में वो-वो मूशिगाफ़ियाँ फ़रमाते हैं कि उसकी नज़ीर नहीं मिलती। आदावे शरीअत का पास-ने लिहाज़ बहुत ज़ियादा रहता है। अज़मते मुस्ताफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के डंके बजाते हैं।

सफ़रे हरमैन तय्येबैन के लिए तशरीफ़ ले जाते तो अजीब शान के साथ। जैसे-जैसे तारीख़े रवांगी, क़रीब आती है तो इश्तियाक़ में इज़ाफ़ा होता है। और वज्द की कैफ़ियत तारी होती है। मदीना, और मदीना वाले के जलवों से अअ़ला

हज़रत का क़ल्ब-ने जिगर मअमूर होता है। और वारफ़्तगी तारी होती है। और इसी वारफ़्तगी में ये अश्शआर ज़बान पर आते हैं।

भीनी सुहानी सुब्ह में ठंडक जिगर की है  
कलियाँ खिलीं दिलों की हवा ये किधर की है  
खुबती हुई नज़र में अदा किस सहर की है  
चुभती हुई जिगर में सदा किस गजर की है  
हम जाँए और क़दम से लिपट कर हरम कहे  
सौंपा खुदा को तुझको ये अज़मत सफ़र की है  
हम गिंदे कअ्बा फिरते थे कल तक और आज वो  
हम पर निसार है ये इरादत किधर की है  
कालिक जर्बी की सज्द-ए-दर से छुड़ाओगे  
मुझ को भी ले चलो ये तमन्ना हजर की है  
डूबा हुआ है शौक़ में ज़मज़म और आँख से  
झाले बरस रहे हैं ये हसरत किधर की है  
बरसा कि जाने वालों पे गौहर करूँ निसार  
अब्रे करम से अर्ज़ ये मीज़ाबे ज़र की है  
आगोशे शौक़ खोले है जिनके लिए हतीम  
वो फिर के देखते नहीं ये धुन किधर की है  
जब अअूला हज़रत मदीना मुनव्वरा की तरफ़ रवाना  
होते हैं तो मदीना और साहिबे मदीना की अज़मतों का  
तसव्वुर करते हुए फ़रमाते हैं।

हाँ-हाँ रहे मदीना है गाफ़िल ज़रा तू जाग  
 ओ पाँव रखने वाले ये जा चश्मे-ने सर की है  
 वारुँ क्रदम-क्रदम पे कि हर दम है जाने नव  
 ये राहे जाँफ़ज़ा मेरे मौला के दर की है  
 अल्लाह अकबर अपने क्रदम और ये खाके पाक  
 हसरत मलाइका को जहाँ वज़अे सर की है  
 मेअ्राज का समाँ है कहाँ पहुँचे जाइरो  
 कुर्सी से उँची कुर्सी इसी पाक घर की है

फिर जब सरकारे मदीना के सब्ज़ गुबंद के करीब  
 पहुँचते हैं तो यूँ नवासंज होते हैं।

महबूवे रब्बे अर्श है इस सब्ज़ कुब्बा में  
 पहलू में जलवागाह अतीक़-ने उमर की है

फिर अअूला हज़रत इस दरवार की अज़मत-ने बुलंदी  
 और मलाइका की मुसलसल वराए सलाम हाज़िरी का यूँ ज़िक्र  
 फ़रमाते हैं।

छाए मलाइका हैं लगातार है दुरुद  
 बदले हैं पहेरे बदली में बारिश दुरर की है  
 इस मज़मून को बड़ी ख़ूबी के साथ अपने इस शेअूर में बयान  
 फ़रमाते हैं

तयबा में मर के ठंडे चले जाओ आँखें बंद  
 सीधी सड़क ये शहरे शफ़ाअत नगर की है

सत्तर हज़ार सुबह हैं सत्तर हज़ार शाम

यूँ बन्दगी-ए-जुल्फ़-ने रुख़ आठों पहर की है  
जो एक बार आयें दोबारा न आएंगे  
रुख़सत ही वारगाह से बस इस क़दर की है

फिर मअ्सूम फ़रिश्तों और उम्मते मुहम्मदिया के  
आसी व गुनाहगारों की हाज़िरायों का फ़र्क़ ज़ाहिर फ़रमाते हैं  
कि मअ्सूम फ़रिश्तों को तो उम्र में सिर्फ़ एक मर्तबा वारगाहे  
मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में सलातो सलाम का  
नज़राना पेश करने की इजाज़त मिलती है मगर उम्मते  
मुहम्मदिया के गुनाहगारों व आसियों के बारे में फ़रमाते हैं।

मअ्सूमों को है उम्र में सिर्फ़ एक बार वार

आसी पड़े रहें तो सिला उम्र भर की है  
ज़िन्दा रहें तो हाज़िरी वारे गहे नसीब

मर जाएँ तो हयाते अबद औश घर की है।

मदीना मुनव्वरा में मौत बड़ी मुबारक मौत है, जिस के बारे में  
हुज़ूर ने इर्शाद फ़रमाया :-

مَنْ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَمُوتَ  
بِالْمَدِينَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا فَإِنَّهُ اشْفَعُ لِمَنْ يَمُوتُ۔

तर्जमा तुम में से जिस से हो सके कि मदीना में  
मरे तो मदीना में ही मरना कि जो इसमें मरेगा मैं उसकी



शफ़ाअत करुंगा।

इस मज़मून को बड़ी खूबी के साथ अपने इस शेअर में बयान फ़रमाते हैं

तयबा में मरके ठंडे चले जाओ आख़ें बन्द  
सीधी सड़क ये शहरे शफ़ाअत नगर की है

ये सफ़रे हरमैन तय्येबैन के मौक़अ पर अअूला हज़रत के क़ल्ब-ने जिगर की कैफ़ियतें जिन को अपने अशआर में ज़ाहिर फ़रमाया है, लिहाज़ा हर नाज़िर-ने मुसाफ़िरे हरमैन को इन कैफ़ियात के हुसूल की कोशिश करनी चाहिए और यही मक़बूलियते हज़्ज की निशानी है।

फ़क़ीर कादिरी रज़वी

मुहम्मद मुस्लेहउदीन सिदीक़ी  
ख़तीब जामेअ मस्जिद खोड़ी गार्डन  
कराची (पाकिस्तान)

## بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

مَا بَعْدُ ये चन्द हुरफ़ हिदायते हुज्जाज के लिए हैं, इन में अक्सर किताबे मुस्तताब जवाहरुल बयान शरीफ़ तस्नीफ़े लतीफ़े अक्दस हज़रत ख़ातिमुल मुहक़िक़ीन सय्येदुना व मौलाना मौलवी मुहम्मद नक़ी अली ख़ाँ साहिब क़ादिरी बरकाती कुद्स्सिररहुशरीफ़ से इल्लिक़ात (9) किए हैं। ३, शव्वाल सन् 9329 हिजरी को वाला जनाब हज़रत सय्येद मुहम्मद अहसन साहिब बरेलवी ने फ़क़ीर अहमद रज़ा क़ादिरी गुफ़रलहु से फ़रमाया कि 90 शव्वाल को मेरा इरादए हज्ज है। बहुत लोग जाते हैं। हज्ज का तरीक़ा और सफ़र के आदाब लिख कर छाप दें। हज़रत सय्येद साहिब के हुक्म से ब कमाले इस्तेअजाल ये चन्द सुतूर तहरीर हुई। उम्मीद है कि ब-बरकते सादात किरामुल्लाहि तआला क़बूल फ़रमाए और मुसलमान भाईयों को नफ़अ पहुँचाए। -

आमीन

- 
- 9) और सदहा मसाइल अपने रिसाइल और मनसके मुतवस्सिता वग़ैरह से इज़ाफ़ा किए।

## फ़स्ले अव्वल

आदाबे सफ़र व मुक़द्दिमाते हज्ज में

- १) जिसका क़र्ज़ आता हो या अमानत पास हो अदा कर दे। जिनके माल नाहक लिए हों, वापस दे या मुआफ़ करा ले। पता न चले तो उतना माल फ़क़ीरों को दे दे।
- २) नमाज़, रोज़ा, ज़कात, जितनी इबादात ज़िम्मा पर हों अदा करे और ताइब हो।
- ३) जिसकी बे इजाज़त सफ़र मकरुह है, जैसे माँ-बाप, शौहर उसे रज़ामन्द करे जिसका उसपर क़र्ज़ आता है, इस वक़्त न दे सके तो उससे भी इजाज़त ले। फिर भी हज्ज किसी की इजाज़त न देने से रुक नहीं सकता। इजाज़त में कोशिश करे, न मिले जब भी चला जाए।
- ४) इस सफ़र से मक़सूद सिर्फ़ अल्लाह व रसूल हों।
- ५) औरत के साथ जब तक शौहर या महरमे बालिग़ क़ाविले इत्मिनान न हो। जिससे निकाह हमेशा को हराम है, सफ़र हराम है। अगर करेगी हज्ज हो जाएगा मगर हर क़दम पर गुनाह लिखा जाएगा।
- ६) तोशा माले हलाल से हो, वरना कुबूले हज्ज की उम्मीद नहीं। अगरचे फ़र्ज़ उतर जाएगा।
- ७) हाजत से ज़ियादा तोशा लेकर रफ़ीकों की मदद और

फ़कीरों पर तसद्दुक करता चले ये हज्जे मबरुर की निशानी है।

- ८) आलिम कुतुबे फ़िक्रह बक्रदरे क़िफ़ायत साथ ले वरना किसी आलिम के साथ जाए। ये भी न मिले तो कम अज़ कम ये रिसाला हमराह हो।
- ९) आईना, सुर्मा, कंधा, मिसवाक साथ रखे कि सुन्नत है।
- १०) अकेला सफ़र न करे कि मनअू है। रफ़ीक़ दीनदार हो कि बद दीन की हमराही से अकेला बेहतर है।
- ११) हदीस में है, जब तीन आदमी सफ़र में जाएँ. अपने में एक को सरदार बना लें। इस में कामों का इन्तिज़ाम रहता है। सरदार उसे बनाए जो ख़ुश ख़ल्क़ दीनदार हो। सरदार को चाहिए रफ़िक़ों के आराम को अपनी आसाइश पर मुक़दम रखे।
- १२) चलते वक़्त सब अज़ीज़ों. दोस्तों से मिले और अपने कुसूर मुआफ़ कराले और अब उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआफ़ कर दें। हदीस में है जिसके पास उसका मुसलमान भाई मअज़िरत लाए वाजिब है कि कुबूल करले वरना हौजे कौसर पर आना न मिलेगा।
- १३) वक़्ते रुख़मत सब से दुआ ले कि बरकत पाएगा।
- १४) उन सब के दीन, जान, अबलाद, माल, तंदरुस्ती, आफ़ियत ख़ुदा को सौंपे।

- १५) लिबासे सफ़र पहनकर घर में चार रकअत नफ़ल अल्हम्दु व कुल से पढ़कर बाहर निकले, वो रकअतें वापस आने तक उसके अहल-ने माल की निगहबानी करेंगी।
- १६) जिधर सफ़र को जाएं जुमेअरात, हफ़ता या पीर का दिन हो और सुबह का वक़्त मुबारक है, और अहले जुमअ को, सफ़रे जुमअ, क़ब्ले जुमअ अच्छा नहीं।
- १७) दरवाज़ा से बाहर निकलते ही कहे :-

**तर्जमा :-** अल्लाह के नाम और अल्लाह की मदद से और मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया और न गुनाहों से फिरना न ताअत की ताक़त मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से इलाही हम तेरी पनाह मांगते हैं इससे कि खुद लगज़िश करें या दुसरा हमें लगज़िश दे या खुद बहकें या दुसरा हमें बहका दे या जुल्म करें या हम पर जुल्म हो या जिहल करें या हम पर कोई जिहल करे। (और दुरुद शरीफ़ की कसरत करे)

بِسْمِ اللَّهِ وَبِاللَّهِ وَتَوَكَّلْتُ  
عَلَى اللَّهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا  
بِاللَّهِ اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ  
نُرَكَّبَ أَوْ نُرَكَّبَ أَوْ نُضَلَّ أَوْ  
نُظْلِمَ أَوْ نُظْلَمَ أَوْ  
نَجْهَلَ أَوْ يَجْهَلَ عَلَيْنَا  
أَحَدٌ

१८) सब से रुख़सत के बाद अपनी मस्जिद से रुख़सत होते वक़्ते कराहत न हो तो उसमें दो रक़अत नफ़ल पढ़े।

१९) चलते वक़्त कहे :-

**तर्जमा :-** इलाही हम तेरी पनाह मांगते हैं सफ़र की मशक्कत और वापसी की बदहाली और माल या अहल या अवलाद में कोई बुरी हालत नज़र आने से।

اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ  
وَعَثَاءِ السَّفَرِ وَكَابَةِ  
الْمُنْقَلَبِ وَسُوءِ الْمُنْظَرِ  
فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ وَالْوَالِدِ.

वापसी तक माल और अहलो इयाल महफूज़ रहेंगे।

२०) उसी वक़्त तब्बत के सिवा कुलया से अरुज़ो बिरब्बिन्नास तक पाँच सूरतें मअ़ बिस्मिल्लाह पढ़े फिर आखिर में एक बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ ले। रास्ते भर आराम से रहेगा।

२१) नीज़ उसी वक़्त :-

**तर्जमा :-** बेशक वो जिसने तुझे पर कुरऑन फ़र्ज़ किया। ज़रूर तुझे फिरने की जगह वापस लाएगा।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ  
الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَى  
مَعَادٍ.

एक बार पढ़ ले बिलख़ैर वापस आएगा।

२२) रेल वगैरह या जिस सवारी पर सवार हो विसमिल्लाह कहे फिर अल्लाहु अकबर और अल्हम्दुलिल्लाह और सुद्धानल्लाह तीन तीन बार ला इलाहा इल्लल्लाहु एक बार फिर कहे।

**तर्जमा :-** पाकी है उसे जिसने इसे हमारे बस में कर दिया और हमें इसकी ताकत न थी। बेशक हम ज़रूर अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं।

سُبْحَانَ الَّذِي  
سَخَّرَلَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا  
لَهُ مُقْرِبِينَ وَإِنَّا إِلَى  
رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ

२३) हर बुलंदी पर चढ़ते वक़्त अल्लाहु अकबर और ढाल में उतरते वक़्त सुद्धानल्लाह कहे।

२४) जिस मंज़िल में उतरे :-

**तर्जमा :-** मैं अल्लाह की कामिल बातों की पनाह मांगता हूँ उसकी सब मख़्लूक की शर से।

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ  
مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

२५) जब वो बस्ती नज़र पड़े जिस में ठहरना या जाना चाहता है कहे :-

**तर्जमा :-** इलाही हम तुझ से पनाह मांगते हैं, इस बस्ती

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ  
خَيْرَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرِ

की भलाई और इस बस्ती वालों की भलाई और इस बस्ती में जो कुछ है उस की भलाई और तेरी पनाह मांगते हैं इस बस्ती की बुराई से और इस बस्ती में जो कुछ है उसकी बुराई से।

أَهْلِيهَا وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَ  
نَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ  
هَذِهِ الْقَرْيَةِ وَشَرِّ  
أَهْلِيهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا

हर बला से महफूज़ रहेगा।

- २६) जिस शहर में जाए वहाँ के सुन्नी आलिमों और बा शरअ फ़क़ीरों के पास अदब से हाज़िर हो। मज़ारात की ज़ियारत करे। फ़ुज़ूल सैर तमाशे में वक़्त न खोए।
- २७) जिस आलिम की ख़िदमत में जाए वो मकान में हो तो आवाज़ न दे, बाहर आने का इन्तिज़ार करे। उस के हुज़ूर बेज़रूरत कलाम न करें। बेइजाज़त लिए मसअला न पूछे। उसकी कोई बात अपनी नज़र में ख़िलाफ़े शरअ हो तो एअतराज़ न करे। और दिल में नेक गुमान रखे। मगर ये सुन्नी आलिम के लिए है। बदमज़हब के साए से भी भागे।
- २८) ज़िक़रे खुदा से दिल बहलाए कि फ़रिशता साथ रहेगान कि शेअूर-ने लगावियात से शैतान साथ होगा। रात को ज़्यादा चले कि सफ़र जल्द तय होता है।



२९) मंज़िल में रास्ते से बच कर उतरे कि वहाँ साँप वगैरह मूज़ियों का गुजर होता है।

३०) रास्ते पर पेशाब वगैरा बाइसे लअूनत है।

३१) मंज़िल में मुतफ़र्रिक़ होकर न उतरें। एक जगह रहें।

३२) हर सफ़र खुसूसन सफ़रे हज्ज में अपने और अपने अज़ीज़ों, दोस्तों के लिए दुआ से ग़ाफ़िल न रहे कि मुसाफ़िरों की दुआ कुबूल होती है।

३३) जब दरिया में सवार हो कहे :-

**तर्जमा :-** अल्लाह के नाम से है इस कश्ती का चलना और ठहरना, बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है। काफ़िरों ने खुदा ही की क़द्र जैसी चाहिए थी न पहचानी हालाँकि सारी ज़मीन क़यामत के बहुत हक़ीर सी चीज़ की तरह उसके क़ब्ज़े में है और सब आसमान उसकी कुदरत से लपेटे जाएंगे वो पाक़ने बुलंद है उनके शिर्क से।

بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا  
وَمُرْسَاهَا إِنَّ رَبِّيَ  
لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ وَمَا  
قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ  
وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ  
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَوَاتُ  
مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ  
سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا  
يُشْرِكُونَ ۝

डूबने से महफ़ूज़ रहेगा। जब किसी मुशकिल में मदद की

हाजत हो तीन बार कहे (ऐ  
अल्लाह के नेक बंदो मेरी मदद करो) ग़ैब से मदद  
होगी। ये हुक्म हदीस में है)

३४) या समदु **يَا صَدُّ** (ऐ बेनियाज़) १३४ बार रोज़ाना  
पढ़े। भूक प्यास से बचेगा।

३५) अगर दुश्मन या रहज़न का डर हो सूरए लेइलाफ़ पढ़े  
कि चोर और शैतान से अमान रहे।

३६) सोते वक़्त आयतुलकुर्सी एक बार हमेशा पढ़े कि चोर  
और शैतान से अमान में रहे।

३७) अगर कोई चीज़ गुम हो जाए तो कहे :-

**तर्जमा :-** ऐ यक़ीनी दिन के  
लिए सब लोगों के जमअ  
फ़रमाने वाले बेशक अल्लाह  
वअ़दा ख़िलाफ़ नहीं करता  
मुझे मेरी गुमी चीज़ मिलादे।

**يَا جَامِعَ النَّاسِ  
لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ  
اللّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ  
اجْمَعُ بَيْنِي وَبَيْنَ  
ضَالَّتِي -**

इन्शाअल्लाह तआला मिल जाएगी।

३८) किराया के ऊँट वग़ैरा पर जो कुछ बार (लादना)  
करना हो उसके मालिक को दिखाले और उससे ज़्यादा  
बिग़ैर उस की इजाज़त के न रखे।

३९) जानवर के साथ नर्मी करें, ताक़त से ज़्यादा काम न ले।

बे सबब न मारे! न कभी मुँह पर मारे। हत्तलमकदूर  
उस पर न सोए कि सोते का बोझ ज़्यादा हो जाता है।  
किसी से बात वग़ैरा करने को कुछ देर ठहरना हो तो  
उतरे अगर मुमकिन हो।

४०) सुब्ह-शाम उतर कर कुछ देर पियादा चलने में दीनी  
दुन्यवी बहुत फ़ाएदे हैं।

४१) बहुओं और सब अरबों से बहुत नर्मी से पेश आए।  
अगर वो सख़्ती करें अदब से तहम्मूल करे। इस पर  
शफ़ाअत नसीब होने का वअ़दा फ़रमाया है। खुसूसन  
अहले हरमैन, खुसूसन अहले मदीना, अहले अरब के  
अफ़ज़ाल पर एअ़तराज़ न करे। न दिल में कुदूरत  
लाए। इनमें दोनों जहान की सआदत है।

४२) हम्माल यअ़नी ऊँट वालों को यहाँ के से किराए वाले  
न समझे। बल्कि अपना मख़्दूम जाने और खाने पीने में  
उन से बुख़्ल न करे कि वो ऐसों से नाराज़ होते हैं और  
थोड़ी बात में बहुत खुश हो जाते हैं और उम्मीद से  
ज़्यादा काम आते है।

४३) सफ़रे मदीना तय्यिबा में काफ़िला न ठहरने के बाइस व  
मजबूरी जुहर व अस्त्र मिलाकर पढ़नी होती है। इस के  
लिए लाज़िम है कि जुहर के फ़र्ज़ों से फ़ारिग़ होने से  
पहले इरादा करले कि इसी वक़्त अस्त्र पढ़ूंगा। और  
फ़र्ज़ जुहर के बाद फ़ौरन अस्त्र की नमाज़ पढ़े। यहाँ

तक कि बीच में जुहर की सुन्नतें भी न हों। इसी तरह मगरिब के साथ इशा भी इन्हीं शर्तों से जाइज़ है और अगर ऐसा मौक़ा हुआ कि अस्त्र के वक़्त जुहर या इशा के वक़्त मगरिब पढ़नी हो तो सिर्फ़ इतनी शर्त है कि जुहर व मगरिब के वक़्त निकलने से पहले इरादा कर ले कि इन को अस्त्र व इशा के साथ पढ़ूँगा।

- ४४) वापसी में भी ये तरीक़े मल्हूज़ रखे जो यहाँ तक बयान हुए।
- ४५) मकान पर अपने आने की तारीख़ व वक़्त की इत्तिलाअ पहले से दे दे। बे इत्तिलाअ हरगिज़ न जाए। खुसूसन रात में।
- ४६) सब से पहले अपनी मस्जिद से दो रक़अत नफ़्त के साथ मिले।
- ४७) दो रक़अत घर में आकर पढ़े। फिर सबसे ब-कुशादा पेशानी मिले।
- ४८) अज़ीज़ दोस्तों के लिए कुछ न कुछ तोहफ़ा ज़रूर लाए और हाजी का तोहफ़ा तबुरकाते हरमैन शरीफ़ौन से ज़ियादा क्या है और दूसरा तोहफ़ा दुआ कि मकान में पहुँचने से पहले इस्तिक़बाल करने वालों और सब मुसलमानों के लिए करे कि कुबूल है।

कुरआँन की रुह तक  
पहुँचने के लिए अअूला  
हज़रत का  
तर्जम-ए-कुरआँन कंज़ुल  
ईमान फ़ी तर्जमतिल  
कुरआँन हिन्दी की  
तिलावत और मुतालआ  
कीजिए।

## फ़स्ले दुवुम

एहराम और उसके एहकाम और दाखिली हरमे मुहतरम व मक्का मुकर्रमा व मस्जिदिलहराम

- १) हिन्दियों के लिए मीक़ात (जहाँ से एहराम बांधने का हुक्म है) कोहे यलम लम की महाज़ात है। ये जगह कामरान से निकलकर समन्दर में आती है जब जद्दा दो तीन मंज़िल रह जाता है। जहाज़ वाले इत्तिलाअ दे देते हैं। पहले से एहराम का सामान तय्यार कर रखें।
- २) जब वो जगह करीब आए ख़ूब मल कर नहाएं वुजु करें और न नहा सकें तो सिर्फ़ वुजु कर लें।
- ३) चाहें तो मर्द सर मुंडवाले कि एहराम में बालों की हिफ़ाज़त से नजात मिलेगी। वरना कंघी करके खुशबूदार तेल डालें।
- ४) नाख़ुन कतरें, ख़त बनवाएं, मूए बग़ल व ज़ेरे नाफ़ दूर करें।
- ५) खुशबू लगाएं कि सुन्नत है।
- ६) मर्द सिले कपड़े उतारें, एक चादर नई या धुली ओढ़ें और ऐसा ही एक तहबन्द बाँधें, ये कपड़े सफ़ेद बेहतर हैं।

७) जब वो जगह आजाए तो दो रक़अत व निय्यते एहराम पढ़ें। पहली में फ़ातिहा के बाद कुलया अय्युहल काफ़िरुन दूसरी में कुलहुवल्लाहु।

८) अब हज्ज तीन तरह का होता है। एक ये कि निरा हज्ज करें। इसे इफ़ाद कहते हैं। इसमें सलाम के बाद यूँ कहे :-

तर्जमा :- इलाही मैं हज्ज का इरादा करता हूँ तू इसे मेरे लिए आसान कर दे और मुझ से कुबूल फ़रमा मैंने खास अल्लाह तअला के लिए हज्ज की निय्यत की।

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ  
الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ  
مِنِّي نَوَيْتُ الْحَجَّ مُخْلِصًا  
بِئْتِ اللَّهِ تَعَالَى -

दूसरा ये कि यहाँ से निरे उम्रे की निय्यत करे मक्का मुअज़्जमा में हज्ज का एहराम बांधे इसे तमत्तुअ कहते हैं। इस में बाद सलाम यूँ कहे।  
اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُمْرَةَ  
فَيَسِّرْهَا لِي وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي نَوَيْتُ الْعُمْرَةَ مُخْلِصًا لِلَّهِ تَعَالَى -

तीसरा ये कि हज्ज-ने उम्रा दोनों की निय्यत यहीं से करे और ये सब से अफ़जल है। इसे किरान कहते हैं इसमें बाद सलाम यूँ कहे।  
اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ فَيَسِّرْهُمَا  
لِي وَتَقَبَّلْهُمَا مِنِّي نَوَيْتُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ مُخْلِصًا لِلَّهِ تَعَالَى -

तीनों सुरतों में इस निय्यत के बाद लब्बैक वा आवाज़ कहे

लब्बैक ये है :- **لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ وَلَبَّيْكَ وَلَبَّيْكَ لِأَشْرِيكَ  
لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالرَّحْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكُ  
لِأَشْرِيكَ لَكَ ط**

- ९) ये एहराम था, इसके होते ही ये काम हराम होगए। औरतों से सोहवत, बोसा, मसास, गले लगाना, उसकी इन्दामे निहानी पर निगाह जबकि ये चारों बातें ब-शहवत हों। औरतों के सामने इसका नाम लेना फ़हश गुनाह हैं। हमेशा हराम थे और अब सख्त हराम होगए। किसी से दुन्यवी लड़ाई झगड़ा, जंगल का शिकार, उसकी तरफ़ शिकार करने वाले को इशारा करना या किसी तरह बताना। बन्दूक या बारुद या उसके ज़िब्ह के लिए छुरी देना। उसके अंडे तोड़ना, पर उखेड़ना, पाँव या बाजू तोड़ना, उसका दूध दुहना उसका गोशत या अंडे पकाना, भूनना, बेचना, खरीदना, खाना, नाखुन कतरना। सर से पाँव तक कहीं से कोई बाल जुदा करना, मुँह या सर को किसी कपड़े से छुपाना। बिस्तर या कपड़े<sup>(९)</sup> की बुकची या गठरी सर पर रखना इमामा बांधना, बुरक़अ दस्ताने पहनना, मोज़े या जुराबें वग़ैरा



जो पिन्डली और अक्रदाम के जोड़ को छुपाए पहनना। सिला कपड़ा पहनना। खुशबू वालों या बदन या कपड़ों में लगाना। मलागीरी या कुसुम केसर गरज़ किसी खुशबू के रंगे कपड़े पहनना। जब कि अभी खुशबू दे रहे हों। खालिस खुशबू मुश्क, अंबर, ज़अफ़रान, जावित्री, लौंग, इलायची, दार चीनी, ज़न्जबील वगैरे खाना। ऐसी खुशबू का आंचल में बांधना जिसमें फ़िलहाल महक हो। जैसे मुश्क, अंबर, ज़अफ़रान, सर या दाढ़ी ख़त्मी या किसी खुशबूदार या ऐसी चीज़ से धोना जिससे जूएं मर जाएं। वस्मा मेंहदी का ख़िज़ाब लगाना, गोंद वगैरा से बाल जमाना, ज़ैतून या तिल का तेल अगरचे बेखुशबू हो बदन या बालों में लगाना, किसी का सर मूंडना अगरचे उसका एहराम न हो। जूँ मारना, फ़ेंकना किसी को उसके मारने का इशारा करना। कपड़ा उसके मारने को धोना या धूप में डालना। बालों में पारा वगैरा उसके मरने को लगाना गर्ज़ जूँ के हलाक पर किसी तरह बाइस होना।

- १०) एहराम में ये बातें मकरुह हैं। बदन का मैल छुड़ाना बाल या बदन खली या साबून वगैरा बेखुशबू की चीज़ से धोना, कंधी करना इस तरह खुजाना कि बाल टूटें या जूँ गिरे, अंगरखा, कुर्ता या चुगा पहनने की तरह कंधो पर डालना, खुशबू सूघना, अगरचे खुशबूदार फ़ल या पत्ता जैसे लेमू, नारंगी, पुदीना इतर दाना सर-या मुँह

पर पट्टी बांधना, गिलाफ़े कअ़्बा मुअज़्ज़मा के अंदर इस तरह दाख़िल होना कि गिलाफ़ शरीफ़ सर या मुँह से लगे। नाक वग़ैरा मुँह का कोई हिस्सा कपड़े से छुपाना। कोई ऐसी चीज़ खाना पीना जिसमें खुशबू पड़ी हुई हो और न वो पकाई गयी हो न ज़ाईल हो गई हो। बे सिला कपड़ा रफ़ू किया या पेवन्द लगा हुआ पहनना। तकिया पर मुँह रख कर औंधा लेटना। महकती खुशबू हाथ से छूना जब कि हाथ में लग न जाए। वरना हराम है। बाज़ू या गले पर तअ्वीज़ बांधना अगरचे बे सिले कपड़े में लपेटकर बिला उज़्र बदन पर पट्टी बांधना, सिंगार करना, चादर ओढ़ना उसके आँचलों में गिरह दे लेना। तहबन्द बाँध कर कमर बन्द से कसना।

99) ये बातें एहराम में जाइज़ हैं।

अंगरखा, कुर्ता, चुगा लपेट कर ऊपर से इस तरह डाल लेना कि (1) सर और मुँह न छुपे। इन चीज़ों या पजामा का तहबन्द बाँध लेना। हमयानी या पट्टी बांधना, मैल छुड़ाए, हमाम करना, किसी चीज़ के साए में बैठना, छतरी लगाना फ़सद बिग़ैर बाल मूँडे पछने लेना, आँख में जो बाल निकले उसे जुदा करना, सर या बदन इस तरह खजाना कि वाल न टटे और जँ न गिरे एहराम

يكره تعصيب رأسه ولو عقبه يومها اوليلة فعليه صدقة ولا شيء  
عليه لو عصب غيره من بدنه لعلته او لغيره لئلا يكره

से पहले जो खुशबू लगाई है उस का लगा रहना, पालतू जानवर, ऊँट, गाय, बकरी, मुर्गी, का ज़िद्द करना, पकाना, खाना, उसका दूध दुहना अंडे तोड़ना, भूनना, खाना, खाने के लिए मछली का शिकार करना, दवा के लिए किसी दरयाई जानवर का मारना, दवा या गिज़ा के लिए न हो. निरी तफ़रीह मंज़ूर हो कि जिस तरह लोगों में राइज है तो शिकारे दरया हो या जंगल खुद ही हराम है। और एहराम में सख्त तर हराम। मुँह और सर के सिवा किसी और जगह ज़ख्म पर पट्टी बांधना। सर या गाल के नीचे तकिया रखना। सर या नाक पर अपना या दूसरे का हाथ रखना, कान कपड़े से छुपाना, ठूड़ी से निचे दाढ़ी पर कपड़ा आना, सर पर सीनी और बोरी उठाना, जिस खाने के पकने में मुश्क वगैरा पड़े हों, अगरचे खुशबू दे या बे पकाए जिसमें कोई खुशबू डाली और वो बू नहीं देती, उसका खाना पीना, घी या चर्बी या कड़वा तेल या नारियल या बादाम या कद्दू का तेल कि बसाया न हो, बालों या बदन में लगाना, खुशबू के रंगे कपड़े पहनना, जब कि उनकी खुशबू जाती रही हो। मगर कुसुम केसर का रंग मर्द को वैसे ही हराम है। दीन के लिए लड़ना झगड़ना बल्कि हस्वे हाजत फ़र्ज़ने वाजिब है। जूता पहनना जो कि पाँव के उस जोड़ को न छुपाए। बे सिले कपड़े में लपेट कर तअवीज़ गले में डालना। आईना देखना, ऐसी खुशबू का छूना

जिस में फ़िलहाल महक नहीं, जैसे अगरबत्ती, लोबान, संदल या उसका आँचल में बाँधना, निकाह करना।

१२) इन मसाइल में औरत मर्द बराबर हैं। मगर औरत को चन्द बातें जाइज़ हैं। सर छुपाना, बल्कि ना-महरम के सामने और नमाज़ में फ़र्ज़ है तो सर पर बिस्तर, बक्चा उठाना, ब-दर्जए ऊला। गोन्द वग़ैरा से बाल जमाना। सर वग़ैरा पर पट्टी ख़्वाहा बाजू या गले पर तअ्वीज़ बाँधना। अगरचे सी कर ग़िलाफ़े कअबा के अंदर यूँ दाख़िल होना कि सर पर रहे। मुँह पर न आए। दस्ताने, मोज़े, सिले कपड़े पहनना, औरत इतनी आवाज़ से लब्बैक न कहे कि ना-महरम सुने, हाँ इतनी आवाज़ हर पढ़ने में हमेशा सब को ज़रूर है कि अपने कान तक आवाज़ आए।

**तंबीह :-** एहराम में मुँह छुपाना औरत को भी हराम है। नामहरम के आगे कोई पंखा वग़ैरह मुँह से बचा हुआ सामने रखे।

१३) जो बातें एहराम में नाज़ाइज हैं वो अगर किसी उज़्र से या भूल कर हों तो गुनाह नहीं! मगर उन पर जो जुर्माना मुकर्रर है, हर तरह देना आएगा, अगरचे वे क्रस्द हों। सह्वन या जबरन या सोते में।

१४) वक्ते एहराम से रमी जुमरा तक जिस का ज़िक्र आगे आएगा। अकसर अवक्रात लब्बैक की बेशुमार कसरत

रखें। खुसूसन चढ़ाई पर चढ़ते उतरते, दो क्राफिलों के मिलते, सुब्ह-ने शाम पिछली रात, पाँचों नमाज़ों के बाद मर्द बा-आवाज़ कहें मगर इतनी बुलन्द कि अपने आप या दूसरे को तकलीफ़ न हो।

१५) जब हरम के मुत्तसिल पहुँचे, सर झुकाए आँखें शर्म गुनाह से नीची किए खुशूअ खुजूअ से दाखिल हो और हो सके तो पियादा नंगे पाँव और लब्बैक-ने दुआ की कसरत रखे। और बेहतर ये कि दिन को दाखिल हो नहा करा।

१६) मक्का मुअज़्ज़मा के इर्द गिर्द कई कोस तक हरम का जंगल है। हर तरफ़ उसकी हदें बनी हुई हैं, इन हुदूद के अन्दर तर घास उखेड़ना, खुदरव पेड़ का काटना,<sup>(१)</sup> वहाँ के वहशी जानवरों को तकलीफ़ देना हराम है। यहाँ तक कि अगर सख्त धूप हो और एक ही पेड़ हो उसके साए में हिरन बैठता है तो जाइज़ नहीं कि अपने बैठने के लिए उसे उठाए और अगर कोई वहशी जानवर बैरुने हरम का उसके हाथ में था, उसे लिए हुए हरम में दाखिल हुआ, अब वो जानवर हरम का हो गया। फ़र्ज़ है कि फ़ौरन उसे आज़ाद कर दे मक्का

(१) चील, कव्वा, चूहा, गिरगिट, चिपकली, साँप, बिच्छु, बड़, खटमल, मच्छर, पिस्सू, वगैरह खबीस और मूजी जानवरों का क़त्ल हरम में भी जाइज़ है और एहराम में भी।

मुअज़्जमा में जंगली कबूतर<sup>(१)</sup> व कसरत हैं, हर मकान में रहते हैं खबरदार हरगिज़ उन्हें न उड़ाए, न डराए न कोई ईज़ा पहुँचाए। बअज़ इधर-उधर के लोग जो मक्के में बसे कबूतरों का अदब नहीं करते उनकी रीस न करें। मगर बुरा उन्हें भी न कहे। जब वहाँ के जानवर का अदब है तो मुसलमान इन्सान का क्या कहना।

१७) जब रब्बुल आलमीन जल्ल जलालुहु का शहर नज़र पड़े ठहर कर दुआ मांगे और दुरुदशरीफ़ की कसरत करे और अफ़ज़ल ये है कि नहा कर दाख़िल हो। और मदफूनीने जन्नते मुअल्ला के लिए फ़ातिहा पढ़े।

१८) जब मदआ में पहुँचे जहाँ से कअबा मुअज़्जम नज़र आए। अल्लाह अकबर ये अज़ीम कुबूल व अजाबत का वक़्त है। सिद्क़ दिल से अपने और तमाम अज़ीज़ों, दोस्तों, मुसलमानों के लिए मग़फ़िरत और आफ़ियत की दुआ मांगे। और फ़कीर एक दुआ-ए-जामेअ अर्ज़ करता है। दुरुदशरीफ़ की कसरत करें और इसे कम से कम तीन बार पढ़े :-

तर्जमा :- इलाही ये तेरा घर है और मैं तेरा बन्दा, इलाही

اللَّهُمَّ هَذَا بَيْتُكَ  
وَإِنَّا عَبْدُكَ أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ

(१) कहा जाता है कि ये कबूतर उस मुबारक जोड़े की नस्ल से हैं जिन्हें हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत के वक़्त ग़ारे सौर में अंडे दिए थे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इस ख़िदमत के सिले में इन को अपने हरमे पाक में जगह बख़शी।

मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ  
 गुनाहों की मुआफ़ी और दीन  
 और दुनिया-ने आखिरत में  
 हर बला से महफूज़ी अपने  
 लिए और अपने माँ-बाप और  
 सब मर्दों औरतों और तेरे  
 हक़ीर बन्दे अहमद रज़ा बिन  
 नक़ी अली के लिए इलाही  
 उस की ज़बरदस्त इम्दाद  
 फ़रमा। आमीन!

وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّينِ وَالدُّنْيَا  
 وَالْآخِرَةِ لِي وَلِوَالِدِيَّ وَ  
 لِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ  
 وَلِعَبْدِكَ أَحْمَدُ رِضَا بِنِ نَقِي  
 عَنِّي اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُمَا  
 وَارْحَمْهُمَا وَأَضْرُءَ نَصْرًا  
 عَزِيزًا .

फिर दुरुदशरीफ़ पढ़े।

१९) यूँ ही ज़िक्रे ख़ुदा-व रसूल और अपने तमाम मुसलमानों  
 के लिए दुआ-ए-फ़लाहे दारैन् करता हुआ बाबुस्सलाम  
 तक पहुँचे और उस आस्ताना पाक को बोसा देकर  
 दाहिना पावँ पहले रख कर दाख़िल हो और कहे :-

तर्जमा :- अल्लाह के नाम से  
 और सब ख़ूबियाँ ख़ुदा को  
 और रसूलुल्लाह पर सलाम  
 इलाही दुरुद भेज हमारे आक्रा  
 मुहम्मद और उनकी आल  
 पर और उनकी बीबियों पर,  
 इलाही मेरे गुनाह बख़्श दे

بِسْمِ اللَّهِ الْحَمْدُ  
 لِلَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ  
 اللَّهِ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى  
 سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى  
 آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ  
 أَرْوَاحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
 اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي

और मेरे लिए अपनी रहमत **وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ۝**  
के दरवाज़े खोल दे।

२०) ये दुआ खूब याद रखे, जब कभी मस्जिदिलहराम शरिफ़ ख्वाह किसी मस्जिद में दाखिल हो इसी तरह जाए और यही पढ़े। और जब किसी मस्जिद से बाहर आए पहले बायाँ पाँव बाहर रखे और यही दुआ पढ़े मगर आखिर में रहमतिका फ़ज़्लिका कहे और ये लफ़्ज़ और बढ़ा दे :-

तर्जमा :- और मेरे लिए अपनी  
रोज़ी के दरवाज़े आसान कर  
दे।

**وَسَهِّلْ لِي أَبْوَابَ  
رِزْقِكَ ۝**

इसकी बरकात दीन-ने दुनिया में बेशुमार हैं।  
वलहम्दुलिल्लाह!

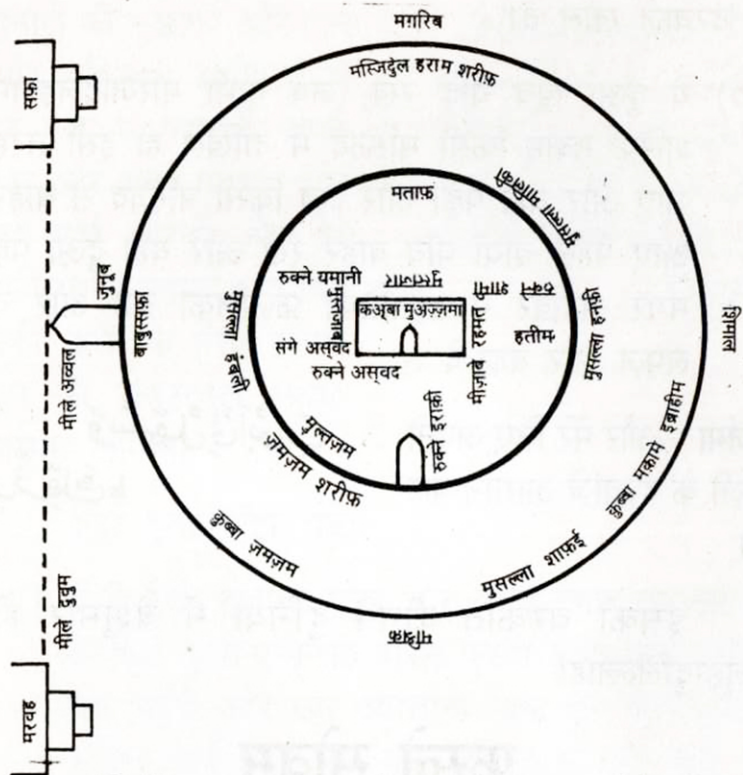
## फ़स्ले सोवुम

तवाफ़ व सई-ए-सफ़ा-व मरवा का बयान

अब मस्जिदिल हराम में दाखिल हुआ अगर जमाअत क्रायम या नमाज़े फ़र्ज़ ख्वाह वित्र या सुन्नते मुअक्कदा के फ़ौत होने का ख़ौफ़ न हो तो सब कामों से मुतवज्ज-ए-तवाफ़ हो कअूबा शमअ है और परवाना देखता नहीं कि परवाना शमअ के गिर्द कैसे कुर्बान होता है। यूँ ही तू भी इस शमअ पर कुर्बान होने के लिए मुस्तइद होजा पहले इस मुक़ामे करीम का



नक्शा देखे कि जो बात कही जाए खूब ज़ेहन में आए।



मस्जिदिल हराम एक गोल वसीअ़ इहाता है। जिसके किनारे किनारे बकसरत दालान और आने जाने के दरवाज़े हैं। और बीच में मुताफ़, मुताफ़ एक गोल दायरा है। जिसमें संगमरमर बिछा है। इसके बीच में कअब-ए-मुअज़्ज़मा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में मस्जिदिल हराम इसी क़दर थी इसकी हद पर बाबुस्सलाम शरकी क़दीम दरवाज़े पर वाक़ेअ़ है। रुक्ने मकान का गोशा जहाँ उसकी दो दीवारें मिलती हैं जिसे ज़ाविया कहते हैं। कअबा मुअज़्ज़मा के

चार रुक्न है।

### रुक्ने असवद

जुनुब-ने-मशिरक के गोशा में इसी में ज़मीन से ऊँचा संगे असवद शरीफ़ नसब है।

### रुक्ने इराक़ी

मशिरक़ो शिमाल के गोशा में दरवाज़-ए-कअूबा इन्हीं दोनों रुक्नों के बीच की शरक़ी दीवार में ज़मीन से बहुत बुलन्द है।

### मुल्लज़म

इसी शरक़ी दीवार का वो टुकड़ा जो रुक्ने असवद से दरवाज़-ए-मुअज़ज़मा तक है।

### रुक्ने शामी

शिमाल, गर्ब के गोशा में मीज़ाबे रहमत सोने का परनाला रुक्ने शामी व इराक़ी के बीच की शिमाली दीवार पर छत में नसब है। हतीम भी इसी शिमाली दीवार की तरफ़ है। ये ज़मीन<sup>(१)</sup> कअूबा मुअज़ज़मा ही की थी। ज़मान-ए-जाहिलियत में जब कुरैश ने कअूबा अज़ सरे नव बनाया कमी-ए-खर्च के बाइस इतनी ज़मीन कअूबा मुअज़ज़मा से

(१) जुनुबन शिमालन छः हाथ कअूबा की ज़मीन है और बअूज़ कहते हैं सात हाथ बअूज़ का खयाल है कि सारा हतीम है।

बाहर छोड़ दी इसके इर्द गिर्द एक कौसी अन्दाज़ की एक छोटी सी दीवार खींच दी और दोनों तरफ़ आमदने रफ़्त का दरवाज़ा है। और ये मुसलमानों की खुशनसीबी है। इसमें दाखिल होना कअ्बा मुअज़्जमा ही में दाखिल होना है। जो बेतकल्लुफ़ नसीब होता है।

### रुक्ने यमानी

गुरुबने जुनूब के गोशा में मुस्तजार रुक्ने इराक़ी व यमानी के बीच की ग़रबी दीवार का वो टुकड़ा जो मुल्लज़म के मुक़ाबिल है। मुस्तजाब रुक्ने यमानी व रुक्ने असवद के बीच में जो दीवार जुनूबी है। यहाँ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ पर आमीन कहने के लिए मुक़र्रर हैं। फ़कीर ने इसका नाम मुस्तजाब रखा। मक़ामे इब्राहीम, दरवाज़-ए-कअ्बा मुअज़्जमा के सामने एक कुब्बा में वो पत्थर है, जिस पर खड़े होकर सय्येदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने कअ्बा बनाया था। उन के क़दमे पाक का उस पर निशान<sup>(१)</sup> हो गया, जो अब तक मौजूद है। और जिसे अल्लाह तआला ने “अल्लाह की खुली निशानियाँ” फ़रमाया। ज़मज़म शरीफ़ का कुब्बा उस से जुनूब को मस्जिद शरीफ़ में वाक़ेअ है।

- (१) हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के क़दमे पाक के निशान में बे क़दर बे अदब लोग कलाम करते हैं। ये मुअज़्जा - ए-इब्राहीमी हज़ारों बरस से महफूज़ है, इस से भी इनकार कर दें।

## बाबुस्सफ़ा

मस्जिद शरीफ़ के दरवाजों में एक दरवाजा है जिस से निकल कर सामने कोहे सफ़ा है। सफ़ा कअ़बा मुअज़ज़मा से जुनूब को एक पहाड़ी थी कि ज़मीन में छुप गई है। अब वहाँ क़िब्ला रुख़ एक दालान सा बना दिया है। और चढ़ने की सीढ़ियाँ। **मरवा** दूसरी पहाड़ी सफ़ा से पूरब को थी। यहाँ भी क़िब्ला रुख़ दालान बना है, और सीढ़ियाँ सफ़ा से मरवा तक जो फ़ासिला है अब यहाँ बाज़ार है। सफ़ा से चलते हुए दाहिने हाथ को दुकानों और बाएं हाथ को इहाता मस्जिदिल हराम है।

मीलैन अख़ज़रीन इस फ़ासिले के वुस्त में दीवारे हरम शरीफ़ में दो सबज़ मील नसब हैं। जैसे मील के शुरु में पत्थर लगा होता है। मसअ़ा वो फ़ासिला कि उन दोनों मीलों के बीच में है ये सब सूरतें रिसाले में बार-बार देखकर ख़ूब ज़ेहन नशीन कर लीजिए कि वहाँ पहुँचकर पूछने की हाजत न हो। नावाक़िफ़ आदमी अंधे की तरह काम करता है। और जो समझ लेगा वो आंखियारा है अब अपने रब अज़ज़ व जल्ल का नामे पाक लेकर तवाफ़ कीजिए।

(१) शुरु तवाफ़ से पहले मर्द इज़्तिबाअ़ करले। यानी चादर की सीधी जानिब दाहिनी बग़ल के नीचे से निकाले कि सीधा शाना खुला रहे और दोनों आँचल बाएं कंधे पर डाल ले।

(२) अब रु-ब-कअ़बा हज़्रे असवद की दाहिनी तरफ़ रुकने

यमानी की जानिब संगे अक्रदस के करीब यूँ खड़े हो कि तमाम पत्थर अपने सीधे हाथ को रहें। फिर तवाफ़ की निय्यत करो :-

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ طَوَافَ بَيْتِكَ  
الْمَحَرَّمِ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي

- (३) इस निय्यत के बाद कअ्बा को मुँह किए अपनी दाहिनी सम्त चलो। जब संगे असवद के मुक्राबिल हो (और ये बात अदना हरकत में हासिल हो जाएगी) कानों तक हाथ इस तरह उठाओ कि हथेलियाँ हज़र की तरफ़ रहें। और कहो :-
- بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ  
وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ

- (४) मुयस्सर हो सके तो हज़रे मुतह्हर पर दोनों हथेलियाँ और उन के बीच में मुहँ रखकर यूँ बोसा दो कि आवाज़ न पैदा हो। तीन बार ऐसा ही करो ये नसीब हो तो कमाले सआदत है। यक्रीनन तुम्हारे महबूब व मौला मुहम्मदु रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उसे बोसा दिया और रुए अक्रदस पर रखा है। ज़हे खुश नसीब कि तुम्हारे मुँह वहाँ तक पहुँचे और हुजूम के सबब न हो सके तो न औरों को इज़ा दो और न आप दबो कुचलो बल्कि इस के इवज़ हाथ से और हाथ न पहुँचे तो लकड़ी से संगे असवद मुबारक छू कर उसे चूम लो। ये भी न बन पड़े तो हाथों से उसकी तरफ़ इशारा करके उन्हें बोसा दे लो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के मुँह रखने की जगह पर निगाहें पड़ रही हैं यही क्या कम है।

(५) **तर्जमा** :- इलाही तुझ पर ईमान लाकर और तेरे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत की पैरवी को ये तवाफ़ करता हूँ।

اللَّهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ  
وَاطِّبَاعًا لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ  
مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ تَعَالَى  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -

कहते हुए सूए दरे कअ़्बा की तरफ़ बढ़ो। जब हज़्र मुबारक के सामने से गुज़र जाओ सीधे हो लो। ख़ानए-कअ़्बा को अपने बाएं हाथ पर लेकर यूँ चलो की किसी को ईज़ा न दो।

- ६) मर्द रमल करता चले यानी जल्द जल्द छोटे-छोटे क़दम रखता शाने हिलाता जैसे क़वी व बहादुर लोग चलते हैं। न तो कूदता न ही दौड़ता। जहाँ ज़्यादा हुजूम हो जाए और रमल में अपनी या ग़ैर की ईज़ा हो उतनी देर रमल तर्क कर दे।
- ७) तवाफ़ में जिस क़दर ख़ान-ए-कअ़्बा से नज़दीक हो बेहतर है। मगर न इतने कि पुश्त-ए-दीवार पर जिस्म या कपड़ा लगे। और नज़दीकी में कसरते हुजूम के सबब रमल न हो सके तो दूरी बेहतर है।
- ८) जब मुल्लज़म, फिर रुक्ने इराक़ी, फिर मीज़ाबुर्हमा

फिर रुकने शामी के सामने आओ तो ये सब दुआ के मवाक्रेअ हैं। इन के लिए खास खास दुआएं कि जो जवाहिरुल बयान शरीफ में मज़कूर हैं। सबका याद करना दुश्वार है। इस से वो इख्तियार करो जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे वजूदा से तमाम दुआओं से बेहतर व अफ़ज़ल है यानी यहाँ और तमाम मवाक्रेअ अपने लिए दुआ के बदले अपने हबीब सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम पर दुरुद भेजो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :- **إِذَا يَكْفِيْ هَمَّكَ وَيُغْفِرُ لَكَ ذَنْبَكَ** :

ऐसा करेगा तो अल्लाह तेरे सब काम बना देगा और तेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा।

- ९) तवाफ़ में दुआ या दुरुद के लिए कहीं रुको नहीं बल्कि चलते में पढ़ो।
- १०) दुआ व दुरुद चिल्ला-चिल्ला कर न पढ़ो। जिस तरह मतूफ़ पढ़ाते हैं बल्कि आहिस्ता इस क़दर कि अपने कान तक आवाज़ आए।
- ११) जब रुकने यमानी के पास आओ तो उसे दोनों हाथ या दाहिने से तर्बरुकन छुओ न सिर्फ़ बाएं से, और चाहो तो उसे बोसा भी दो और न हो सके तो यहाँ लकड़ी से

छूना या इशारा करके हाथ चूमना नहीं।

- १२) जब इससे बढ़ो तो ये मुस्तजाब है। जहाँ सत्तर हज़ार फ़रिशते दुआ पर आमीन कहेंगे। वही दुआए जामेअ पढ़िए या अपने और सब अहबाब व मुस्लिमीन और इस हकीर-ने ज़लील की निय्यत से सिर्फ़ दुरुद शरीफ़ काफ़ी व वाफ़ी है।
- १३) अब जो दुबारा हज़्र तक आएँ ये एक फेरा हुआ यूँ ही सात फेरे करो मगर बाक़ी फेरों में वो निय्यत करना नहीं कि निय्यत तो इब्तिदा में हो चुकी। और रमल सिर्फ़ अगले तीन फेरों में है। बाक़ी चार में आहिस्ता बे जुंबिशे शाना मामूली चाल से चलो।
- १४) जब सातों फेरें हो जाएँ आख़िर में फिर हज़्र असवद को बोसा दो या वही तरीक़े हाथ या लकड़ी को बरतो।
- १५) बादे तवाफ़ मक़ामे इब्राहीम में आकर आयते करीमा **وَ اتَّخِذْ وَا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى** पढ़ कर दो रक़अ्त तवाफ़ कि वाजिब हैं सूरे काफ़िरुन और कुलहुवल्लाहु से पढ़ो अगर वक़्ते कराहत मसलन तुलूअे सुब्ह से बुलंदी-ए-आफ़्ताब तक या दोपहर या नमाज़े अस्त्र के बाद गुरुब तक न हो वरना वक़्त निकल जाने पर बाद को पढ़ो। ये रक़अ़्ते पढ़कर दुआ मांगो। यहाँ हदीस में एक दुआ इर्शाद हुई। जिसके



फ़्राएदों की अज़मत उस का लिखना ही चाहती है :-

**तर्जमा :-** इलाही तू मेरा छुपा और ज़ाहिर सब जानता है। तू मेरा उज़्र कुबूल फ़रमा और मेरी हाज़त तुझे मालुम है तू मेरी मुराद दे और जो मेरे दिल में है तू जानता है तू मेरे गुनाह बख़्श दे इलाही मैं तुझ से मांगता हूँ वो ईमान जो मेरे दिल से पैवस्त हो जाए और सच्चा यक़ीन कि मैं जानूँ कि मुझे वही मिलेगा जो तूने मेरे लिए लिख दिया है। और उस मआश पर राज़ी होना जो तूने मुझे नसीब की है। ऐ सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरबान।

اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ  
سِرِّي وَعَلَانِيَتِي  
فَاقْبَلْ مَعْدِرَتِي وَتَعْلَمُ  
حَاجَتِي فَأَعْطِنِي سُؤْلِي وَ  
تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي فَأَغْفِرْ لِي  
ذُنُوبِي اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ  
إِيمَانًا يَبْأِثُرُ قَلْبِي  
وَيَقِينًا صَادِقًا حَقِّي  
أَعْلَمَ أَنَّكَ لَا يُصِيبُنِي  
إِلَّا مَا كَتَبْتَ لِي وَرَضِي  
مِّنَ الْمَعِيشَةِ بِمَا  
قَسَمْتَ لِي يَا أَرْحَمَ  
الرَّاحِمِينَ ط

हदीस में है अल्लाह अज़ज़ व जल्ल फ़रमाता है जो ये दुआ करेगा मैं उसकी ख़ता बख़्श दूँगा, ग़म दूर करूँगा, मुहताजी उस से निकाल लूँगा, हर ताजिर से बढ़कर उसकी तिजारत रखूँगा। दुनिया नाचार व मजबूर उसके पास आएगी गो वो उसे न चाहे।

१६) फिर मुल्लजम पर जाओ और करीबे हज़र उस से लिपटो और अपना सीना और पेट और कभी दाहिना रुखसारा कभी बायाँ रुखसारा उस पर रखो। और दोनों हाथ सर से ऊँचे कर के दीवार पर फैलाओ या दाहिना हाथ दरवाज़े और बायाँ संगे असवद की तरफ़ और यहाँ की दुआ ये है :-

तर्जमा :- ऐ कुदरत वाले ऐ इज़्ज़त वाले मुझे से ज़ाइल न कर जो नेअमत् तूने मुझे बाख़शी है।

يَا وَاجِدُ يَا مَاجِدُ  
لَا تُزِلْ عَنِّي نِعْمَةَ أَنْعَمْتَهَا  
عَلَيَّ -

हदीस में फ़रमाया, मैं जब चाहता हूँ जिबरईल को देखता हूँ कि मुल्लजम से लिपटे हुए ये दुआ कर रहे है।

१७) फिर ज़मज़म पर आओ और हो सके तो खुद एक डोल खींचो वरना भरने वालों से ले लो और कअ्बा को मुहँ करके तीन सासों में पेट भर के जितना पिया जाए पियो। हर बार बिस्मिल्लाह से शुरु और अल्हम्दुलिल्लाह पर खत्म, बाक़ी बदन पर डाल लो। और पीते वक़्त दुआ करो कि कुबूल है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, ज़मज़म जिस मुराद से पिया जाए उसी के लिए है। यहाँ वही दुआए जामेअ पढ़ो और हाज़िरी-ए-मक्का मुअज़्ज़मा तक पीना तो बारहा नसीब होगा। क्रियामत की प्यास से बचने को पियो। कभी

अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ी को। कभी महब्वते रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बढ़ने को। कभी वुसअते रिज़्क, कभी शिफ़ाए इमराज़, कभी हुसूले इल्म वग़ैरहा। ख़ास-ख़ास मुरादों के लिए पियो।

- १८) वहाँ जब पियो, ख़ूब पेट भर कर पियो। हदीस में है, हम में और मुनाफ़िक़ों में ये फ़र्क़ है कि वो ज़मज़म पेट भर कर नहीं पीते।
- १९) चाहे ज़मज़म के अन्दर भी नज़र करो कि बहुक्मे हदीस दाफ़अे निफ़ाक़ है।
- २०) अब अगर कोई उज़्र, तकान, वग़ैरह का न हो तो अभी वरना आराम लेकर सफ़ा व मरवा में सई के लिए फिर हज़्रे असवद के पास आओ और उसी तरह तकबीर वग़ैरह कहकर चूमो और न हो सके तो उसकी तरफ़ मुहँ कर के फ़ौरन बावे सफ़ा से जानिबे सफ़ा रवाना हो। दरवाज़े से पहले बायाँ पाँव निकालो और दाहिना पैर पहले जूते में डालो। और ये अदब हर मस्जिद से बाहर आते हमेशा मल्हूज़ रखो।
- २१) ज़िक़ो-दुरुद में मशगूल सफ़ा की सीढ़ियों पर इतना चढ़ो कि कअूबा मुअज़ज़मा नज़र आए (और ये बात यहाँ पहली ही सीढ़ी से हासिल है) फिर रुख़ ब-कअूबा होकर दोनों हाथ दुआ की तरह पहले शानों तक उठाओ और देर तक तस्बीह व तहलील, दुरुद व दुआ

करो कि महले इजाबत है। यहाँ भी दुआएँ जामेअ पढ़ो फिर उतर कर ज़िक्र-ने दुरुद में मशगूल मरवा को चलो।

- २२) जब पहला मील आए मर्द दौड़ना शुरू कर दें (मगर न हद से ज़ाइद न किसी को ईजा देते) यहाँ तक कि दूसरे मील से निकल जाएं। इस दर्मियान में सब दुआ ब-कोशिश तमाम करो, यहाँ की दुआ ये है :-

तर्जमा :- ऐ मेरे रब बख्श दे  
और रहम फ़रमा तू ही सब  
से ज़ियादा इज़्जत वाला सब  
से बढ़कर करम वाला।

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْ  
أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ

- २३) दूसरे मील से निकलकर फिर आहिस्ता हो लो यहाँ तक कि मरवा पर पहुँचो, यहाँ पहली सीढ़ी पर चढ़ने बल्कि उस के करीब ज़मीन पर खड़े होने से मरवा पर सुअूद मिल जाता है। यहाँ अगरचे इमारतें बन जाने से कअूबा नज़र नहीं आता मगर रु-ब-कअूबा होकर जैसा सफ़ा पर किया था, करो। ये एक फेरा हुआ
- २४) फिर सफ़ा को जाओ, फिर आओ यहाँ तक कि सातवाँ फेरा मरवा पर खत्म हो, हर फेरे में इसी तरह करें। इसी का नाम सई है। वाज़ेह हो कि उमरा सिर्फ़ इन्हीं अफ़आले तवाफ़-ने सई का नाम है। क़िरान-व तमत्तुअ

वाले के लिए भी यही उमरा हो गया। और इफ़्राद वाले के लिए ये तवाफ़, तवाफ़े कुदूम हुआ यानी हाज़िरी दरबार का मुजरा।

२५) क़ारिन यानी जिसने क़िरान किया है, इसके बाद तवाफ़-ने कुदूम की निय्यत से एक तवाफ़ व सई और बजा लाए।

२६) क़ारिन और मुफ़्रिद जिसने-जिसने इफ़्राद किया था। लब्बैक कहते हुए एहराम के साथ मक्का में ठहरें। उनकी लब्बैक दसवीं तारीख़ रमी जुमरा के वक़्त ख़त्म होगी। ज़भी एहराम से निकलेंगे। जिसका ज़िक्र इन्शाअल्लाह तआला आता है। मगर मुतमत्तेअ जिसने तमत्तोअ किया था। वो और मोअ्तमर यानी निरा उमरा करने वाला शुरु तवाफ़े कअूबा मुअज़्ज़मा से संगे असवद शरीफ़ का पहला बोसा लेते ही लब्बैक छोड़ दें और तवाफ़-ने सई-ए-मज़कुरा के बाद हल्क़ करें। यानी मर्द सारा सर मुंडवा दें या तक़सीर यानी मर्द-ने औरत बाल कतरवाएं और एहराम<sup>(९)</sup> से बाहर आएँ फिर मुतमत्तेअ

(९) क़भी एहराम के साथ ही मिना में कुर्बानी के लिए जानवर हमराह लेते हैं इसे सौक़े हुदा कहते हैं अगर किसी मुतमत्तेअ ने ऐसा एहराम बाँधा हो तो अब उसे भी उमरा के बाद एहराम खोलना जाइज़ न होगा बल्कि क़ारिन की तरह एहराम में रहे और लब्बैक कहा करे यहाँ तक कि दसवीं को रमी के साथ लब्बैक छोड़े। फिर कुर्बानी के बाद हल्क़ या तक़सीर कर के एहराम से बाहर आए।

चाहे तो आठवीं ज़िलाहिज्ज तक बे एहराम रहे। मगर अफ़ज़ल ये है कि जल्द हज्ज का एहराम बाँध ले। अगर ये खयाल न हो कि दिन ज़ियादा हैं ये कैदें न निर्भेंगी।

**तंबीहे** तवाफ़े कुदूम में इज़्तिबाअ व रमल और इसके बाद सफ़ा मरवा में सई ज़रूरी नहीं। मगर अब न करेगा तो तवाफ़ुज़्ज़ियारह में कि हज्ज का तवाफ़ फ़र्ज़ है। जिसका ज़िक्र इन्शाअल्लाह आता है। सब काम करने होंगे और उस वक़्त हुजूम बहुत होता है। अज़ब नहीं कि तवाफ़ में रमल और मिना में दौड़ना न हो सके और उस वक़्त हो चुका तो इस तवाफ़ में उनकी हाजत न होगी। लिहाज़ा इन को मुतलिकन दाख़िले तरकीब कर दिया।

२७) मुफ़्रिदो क़ारिन तो हज्ज की रमल व सई से तवाफ़े कुदूम में फ़ारिग़ हो लिए मगर मुतमत्तेअ ने जो तवाफ़-ो सई किए वो उमरा के थे। हज्ज के रमल-ो सई इस से अदा नहीं हुए। और इस पर तवाफ़े कुदूम है। नहीं कि क़ारिन की तरह इस में ये उमूर कर के फ़रागत पा ले। लिहाज़ा अगर वो भी पहले से फ़ारिग़ हो लेना चाहे तो जब हज्ज का एहराम बाँधेगा। उसके बाद एक नफ़्ले तवाफ़ में रमल-ो सई कर के अब उसे तवाफ़ुज़्ज़ियारह में इन की हाजत नहीं होगी।

२८) अब ये सब हुज्जाज (क़ारिन, मुतमत्तेअ, मुफ़्रिद कोई

हो) कि मिना में जाने के लिए मक्का मुअज़्ज़मा में आठवीं तारीख का इन्तिज़ार कर रहे हैं। अय्यामे इक्रामत में जिस क़दर हो सके निरा तवाफ़ बे इज़्तिबाअ व रमल-ने सई करते रहें। बाहर वालों के लिए ये सब से बेहतर इबादत है और हर सात फेरों पर मक़ामे इब्राहीम अलैहिस्सलातो वत्तस्लीम में दो रकअत पढ़ें।

२९) अब ख़्वाह मिना से वापसी पर जब कभी रात में जितनी बार कअूबा मुअज़्ज़मा पर नज़र पड़े ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर तीन बार कहें और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर दुरुद भेजें, दुआ करें कि वक्ते कुबूल है।

३०) **तवाफ़ अगरचे नफ़ल हो, उसमें ये बातें हराम है :-** बे वुजु तवाफ़ करना, कोई अज़ो जो सतर में दाख़िल है। उसका चहारुम खुला होना मसलन रान या आज़ाद औरत का कान, बे मजबूरी सवारी पर या किसी की गोद में या कंधों पर तवाफ़ करना। बिला उज़्र बैठकर सरकना या घुटनों के बल चलना। कअूबा को दाहिने हाथ पर लेकर उल्टा तवाफ़ करना। तवाफ़ में हतीम के अन्दर हो कर गुज़रना। सात फेरों से कम करना। ये **बातें तवाफ़ में मकरुह हैं :-** फ़ुज़ूल बात तरना, बेचना, ख़रीदना, हम्द, नअूत-ने मन्क़बत के सिवा कोई शेअूर पढ़ना, ज़िक्र या दुआ या तिलावत या कोई कलाम बुलन्द आवाज़ से पढ़ना, नापाक कपड़े में तवाफ़

करना, रमल या इज़्तिबाअ या बोस-ए-संगे अवसद जहाँ जहाँ उनका हुक्म है तर्क करना। तवाफ़ के फेरों में ज़ियादा फ़ासिला देना। यानी कुछ फेरे कर लिए फिर देर तक ठहर गए। या और किसी काम में लग गए। फेरे बाद में किए मगर वुजु जाता रहा तो कर आए। या जमाअत क़ाएम हुई और उसने अभी नमाज़ न पढ़ी हो तो शरीक हो जाए बल्कि जनाज़ह की नमाज़ में भी तवाफ़ छोड़ कर मिल सकता है बाक़ी जहाँ से छोड़ा था आकर पूरा करे। यूँ ही पेशाब, पाख़ाने की ज़रूरत हो तो चला जाए। वुजु कर के बाक़ी पूरा करे। एक तवाफ़ के बाद जब तक उसकी रकअतें न पढ़ ले दूसरा तवाफ़ शुरु कर देना मगर जब कि कराहते नमाज़ का वक़्त हो जैसे सुब्ह सादिक़ से तुलूअे आफ़ताब या नमाज़े अ़स्र पढ़ने के बाद से गुरुबे आफ़ताब तक कि इस में मुतअददद तवाफ़ बे फ़स्ल नमाज़ जाइज़ हैं। वक़्ते कराहत निकल जाए तो हर तवाफ़ के लिए दो रकअत अदा करे। ख़ुत्व-ए-इमाम के वक़्त तवाफ़ करना, जमाअते फ़र्ज़ के वक़्त तवाफ़ करना हाँ, अगर ख़ुद पहली जमाअत में पढ़ चुका तो बाक़ी जमाअतों के वक़्त तवाफ़ करने में हरज नहीं और नमाज़ियों के सामने से गुज़र सकता है कि तवाफ़ भी मिस्ले नमाज़ ही है। तवाफ़ में कुछ खाना, पेशाब, पाख़ाने या रीह के तक्राज़े में तवाफ़ करना।



- ३१) ये बातें तवाफ़-ने सई दोनों में मुबाह हैं :- सलाम करना, जवाब देना, हाजत के लिए कलाम करना, फ़तवे पूछना, फ़तवे देना, पानी पीना हम्द व नअत-ने मन्क़बत के अशआर आहिस्ता आहिस्ता पढ़ना, और सई में खाना खा सकता है।
- ३२) तवाफ़ की तरह सई भी बिला ज़रूरत सवार होकर या बैठकर नाजाईज़-व गुनाह है।
- ३३) सई में ये बातें मकरुह हैं: बेहाजत उस के फेरों में ज़्यादा फ़स्ल देना। मगर ज़माअत कायम हो तो चला जाए। यूँ ही शिरकते जनाज़ह या क़ज़ाए हाजत या तजदीदे वुजू को अगरचे सई में ज़रूरी नहीं, ख़रीदो फ़रोख़्त, फ़ुज़ूल कलाम, सफ़ा या मरवा पर न चढ़ना, मर्द का मसआ में बिना उज़्र न दौड़ना, तवाफ़ के बाद बहुत ताख़ीर करके सई करना, सतरे औरत न होना परेशान नज़री यानी इधर उधर फ़ुज़ूल देखना, सई में भी मकरुह है और तवाफ़ में और ज़ियादा मकरुह। मसअ़ला बेवुजू भी सई में कोई हरज नहीं हाँ बा वुजू मुस्तहब है।
- ३४) तवाफ़-ने सई के सब मसाइले मज़कूरा में औरतें भी शरीक हैं। मगर इज़्तिबाअ रमल, सई में दौड़ना उन के लिए नहीं, मज़ाहिमत के साथ बोस-ए-संगे असवद या मसे रुक्ने यमानी या कुर्बे कअ्वा या ज़मज़म के अन्दर

नज़र या खुद पानी भरने की कोशिश न करें ये बातें यूँ मिल सकें कि नामहरम से बदन न छुए तो ख़ैर वरना अलग-थलग रहना, उसके लिए सबसे बेहतर है।

## फ़स्ले चहारुम

मिना की रवानगी और अरफ़ा का वुकूफ़ :-

- १) सातवीं तारीख मस्जिदे हराम में बाद जुहर इमाम खुत्बा पढ़ेगा उसे सुनो।
- २) यौमुत्तरवियह कि आठवीं तारीख का नाम है, जिसने एहराम न बाँधा हो बाँध ले और एक नफ़ले तवाफ़ में रमल-ने सई करे जैसा कि ऊपर गुज़रा है।
- ३) जब आफ़ताब निकल आए, मिना को चलो और हो सके तो पियादा (पैदल) कि जब तक मक्का मुअज़्ज़मा पलट कर आओगे हर क़दम पर सात नेकियाँ लिखी जाएँगी। सौ हज़ार का लाख, सौ लाख का करोड़, सौ करोड़ का अरब, सौ अरब का खरब ये नेकियाँ तख़मीनन अठत्तर (७८) खरब, चालिस (४०) अरब आती हैं। और अल्लाह का फ़ज़ल उस नबी के सद्क़े में इस उम्मत पर बेशुमार है जल्ल व अ़ला सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

४) रास्ते भर लब्बैक व दुआ और दुरुदो सना की कसरत करो।

५) जब मिना नज़र आए कहो :-

तर्जमा :- इलाही ये मिना है  
तू मुझ पर वो एहसान कर  
जो तूने अपने दोस्तों पर किए।

اللَّهُمَّ هَذَا مِنِّي  
فَامِنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ  
بِهِ عَلَيَّ أَوْلِيَّكَ

६) यहाँ रात को ठहरो। आज जुहर से नवीं की सुबह तक की पाँच नमाज़ें मस्जिदे ख़ीफ़ में पढ़ो। आज कल बअज़ मतूफ़ों ने ये निकाली है कि आठवीं को मिना में नहीं ठहरते सीधे अरफ़ात पहुँचते हैं, उनकी न माने और इस सुन्नते अज़ीमा को हरगिज़ न छोड़े कि काफ़िले के इसरार से उनको भी मजबूर होना पड़ेगा।

७) शबे अरफ़ा मिना में ज़िक्र-ने इबादत से जाग कर सुबह करे। सोने के बहुत दिन पड़े हैं और न हो तो कम अज़ कम इशा व सुबह तो जमाअते ऊला से पढ़ो कि शब बेदारी का सवाब मिलेगा और वा वुजू सोओ कि रुह अर्श तक बुलन्द होगी।

८) सुबह मुस्तहब वक़्त में नमाज़ पढ़कर लब्बैक व ज़िक्र-दुरुद में मशगूल रहो यहाँ तक कि आफ़ताब कोहे सबीर पर कि मस्जिदे ख़ीफ़ शरीफ़ के सामने है चमके। अब अरफ़ात को चलो। दिल को ख़याले ग़ैर से पाक

करने में कोशिश करो कि आज वो दिन है कि कुछ का हज्ज कुबूल करेंगे और कुछ को उनके सदक्रे में बख्श देंगे। महरुम वो जो आज महरुम रहा। वसवसे आएँ तो उनसे लड़ाई न बाँधो कि यूँ भी दुश्मन का मतलब हासिल है, वो तो ये चाहता है कि तुम और खयाल में लग जाओ। लड़ाई बाँधी जब भी तो और खयाल में पड़े बल्कि उन की तरफ़ ध्यान ही न करो। ये समझ लो कि कोई और वुजूद है। जो ऐसे खयालात ला रहा है। तुझे अपने रब से काम है। यूँ इन्शाअल्लाह तआला वो मरदूद-ने नाकाम वापस जाएगा।

- ९) रास्ते भर ज़िक्र-ने दुरुद में बसर करो। वे ज़रूरत बात मत करो। लब्बैक की बेशुमार बार बार कसरत करते चलो।
- १०) जब निगाह जबले रहमत पर पड़े इन उमूर में और ज़्यादा कोशिश करो कि इन्शाअल्लाह तआला वक्ते कुबूल है।
- ११) अरफ़ात में उस कोहे मुबारक के पास या जहाँ जगह मिले शारअे आम से बचकर उतरो।
- १२) आज के हुजूम में लाखों आदमी हज़ारों डेरे खीमे होते हैं। अपने डेरे से जाकर वापसी में इसका मिलना दुश्वार होता है इसलिए पहचान कर निशान उस पर

क्राएम करो कि दूर से नज़र आए।

- १३) मस्तूरात साथ हों तो उन के बुर्क़अ पर भी कोई कपड़ा खास अलामत चमकते रँग का लगा दो कि दूर से देख कर तमीज़ कर सको और दिल में तश्वीश न रहे।
- १४) दोपहर तक ज़ियादा वक़्त अल्लाह के हुज़ूर ज़ारी और ब-इख़्लासे निय्यत हस्वे इस्तिताअत तसद्दुक़ और ख़ैरात व ज़िक्र-ने लब्बैक़ दुरुद-ने दुआ व इस्तिग़फ़ार व कालिम-ए-तौहीद में मशगूल रहो। हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, सब में बेहतर वो चीज़ जो आज के दिन मैंने और मुझ से पहले अंबिया ने कही ये है :-

**तर्जमा :-** अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं वो एक अकेला उसका कोई साझी नहीं उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब ख़ूबियाँ, वही जिलाए, वही मारे और वो ज़िन्दा है कि कभी न मरेगा। सब भलाइयाँ उसी के क़ब्ज़े में हैं और सब कुछ कर सकता है।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ  
وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ  
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ  
يُحْيِي وَيُمِيتُ ط وَهُوَ  
حَيٌّ لَا يَمُوتُ ط بِيَدِهِ  
الْخَيْرُ ط وَهُوَ عَلَى كُلِّ  
شَيْءٍ قَدِيرٌ ط

- १५) दोपहर से पहले खाने पीने वग़ैरहुमा ज़रूरियात से

फ़ारिग होकर कि दिल किसी तरफ़ लगा न रहे। आज के दिन जैसे हाजी को रोज़ा मुनासिब नहीं कि दुआ में जोअफ़ होगा। यूँ ही पेट भर खाना सख़्त ज़हर और ग़फ़लत-ने कसल का बाइस है। तीन रोटी की भूक वाला एक ही खाए। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तो हमेशा के लिए भी हुक्म दिया है। और खुद दुनिया से तशरीफ़ ले गए और जौ की रोटी कभी पेट भर न खाई। हालाँकि अल्लाह के हुक्म से तमाम जहान इख़्तियार में है और था। और अगर अनवार-ने बरकात लेना चाहो तो न सिर्फ़ आज बल्कि हरमैन शरीफ़ैन में जब तक हाज़िर रहो तिहाई पेट से ज़्यादा हरगिज़ न खाओ मानोगे तो इसका फ़ाएदा न मानोगे तो इसका नुक़सान आँखो से देख लोगे। हफ़्ता भर इसपे अमल तो करके देखो। अगली हालत से फ़र्क़ न पाओ जभी कहना। जी बचे तो खाने पीने के बहुत से दिन हैं। यहाँ तो नूर-ने ज़ौक़ के लिए जगह ख़ाली रखो।

“भरा तन दोबारा क्या भरेगा”

- १६) जब दोपहर करीब आए नहाओ कि सुन्नते मुअ्विकिदा है। और अगर न हो सके तो सिर्फ वुजू।
- १७) दोपहर ढलते ही बल्कि इससे पहले कि इमाम के करीब जगह मिले मस्जिदे नमरा जाओ, सुन्नतें पढ़ कर, खुत्वा सुनकर इमाम के साथ जुहर पढ़ो उस के बाद बे तवक्कुफ़ अस्त्र की तकबीर होगी मअन जमाअत से अस्त्र पढ़ो बल्कि बीच में सलाम-ने कलाम तो क्या मअनी सुन्नतें भी न पढ़ो और बादे अस्त्र भी नफ़्त नहीं। ये जुहर व अस्त्र मिलाकर पढ़ना जभी जाइज़ है कि नमाज़ या तो सुल्तान खुद पढ़ाए या वो जो हज्ज में उसका नायाब होकर आता है। जिसने जुहर अकेले या अपनी खास जमाअत से पढ़ी उसे वक़्त से पहले अस्त्र पढ़ना हलाल न होगा। और जिस हिक्मत के लिए शरअ ने यहाँ जुहर के साथ अस्त्र मिलाने का हुक्म फ़रमाया है यानी गुरुबे आफ़ताब तक दुआ के लिए वक़्त ख़ाली मिलना वो जाती रहेगी।
- १८) ख़याल करो जब शरअ को ये वक़्त दुआ के लिए फ़ारिग़ करने का इस क़दर एहतिमाम है तो उस वक़्त और काम में मशग़ूली किस क़दर बेहूदा है। बअज़ अहमक़ों को देखा है कि इमाम तो नमाज़ में है या नमाज़ पढ़कर मोक़फ़ को गया और वो खाने पीने हुक्के चाय उड़ाने में हैं। ख़बरदार ऐसा न करो। इमाम के

साथ नमाज़ पढ़ते ही फ़ौरन मोक़फ़<sup>(१)</sup> को रवाना हो जाओ। और मुमकिन हो तो ऊँट पर कि सुन्नत भी है और हुजूम में दबने कुचलने से महाफ़िज़त भी।

१९) बअज़ मतूफ़ उस मजमअ में जाने से मनअ करते हैं और तरह तरह से डराते है। उनकी न सुनो कि वो खास नुज़ूले रहमते आ़म की जगह है। हाँ औरत और कमज़ोर मर्द यहीं खड़े हुए दुआ में शामिल हों कि बत्ने<sup>(२)</sup> अरफ़ा के सिवा ये सारा मैदान मोक़फ़ है और तसव्वुर यही करें कि हम उस मजमअ में हाज़िर हैं। अपनी डेढ़ ईट की अलग न समझें। इस मजमअ में यक्रीनन बकसरत अवालिया, इल्यास-ो, ख़िज़्र अलैहुमुस्सलातो वस्सलाम नबीयुल्लाह मौजूद हैं। तसव्वुर करें कि अनवारे बरकात जो उस मजमअ पर उन पर उतर रहे हैं उनके सदक़े हम भिखारियों को भी पहुँचता है। यूँ अलग होकर भी शामिल रहेंगे और जिस से हो सके तो वहाँ की हाज़िरी छोड़ने की चीज़ नहीं।

२०) अफ़ज़ल ये है कि इमाम से नज़दीक जबले रहमत के क़रीब जहाँ स्याह पत्थर का फ़र्श है। रु-ब-क़िब्ला पसे

(१) वो जगह कि नमाज़ के बाद से गुरुबे आफ़ताब तक वहाँ खड़े होकर ज़िक़ने दुआ का हुक्म है।

(२) बत्ने अरफ़ा अरफ़ात में हरम के नालों से एक नाला है। मस्जिदे नमरा, के मगरिब यानी मक्का मुअज़ज़मा की तरफ़ वहाँ मोक़फ़ महज़ नाजाइज़ है।



पुश्ते इमाम खड़ा हो जबकि इन फ़ज़ाइल के हुसूल में दिक्कत या किसी की अज़ीय्यत न हो वरना जहाँ और जिस तरह हो सके वुकूफ़ (१) करो इमाम की दाहिनी जानिब और बायीं रु-ब-रु से अफ़ज़ल है ये वुकूफ़ हज्ज की जान और इसका बड़ा रुक्न है।

२१) बअज़्ज जाहिल ये हरकत करते हैं कि पहाड़ पर चढ़ जाते हैं और वहाँ खड़े होकर रुमाल हिलाते रहते हैं। इससे बचो और उनकी तरफ़ भी बुरा ख्याल न करो। ये वक्त औरों के अ़ैब देखने का नहीं अपने अ़ैबों पर शर्मसारी व गिरया वज़ारी का है।

२२) अब वो कि यहाँ हैं कि डेरों में हैं। सब हमातन सिद्क दिल से अपने करीम मेहरबान रब की तरफ़ मुतवज्जह होजाओ और मैदाने क्रियामत में हिसाबे अअमाल के लिए उस के हुज़ूर हाज़िरी का तसव्वुर करो। निहायत खुशूअ खुज़ूअ के साथ लरज़ते, काँपते, डरते, उम्मीद करते, आँखें बंद किए गर्दन झुकाए, दस्ते दुआ आसमान की तरफ़ सर से उँचे फैलाओ तक्बीर, तहलील, तस्बीह, लब्बैक, हम्द, ज़िक्र, दुआ, तौबा, इस्तिग़फ़ार में डूब जाओ कोशिश करो कि एक क्रतरा आसुओं का टपके कि दलीले इजाबत-ने सआदत वरना रोने का सा मुहँ बनाओ कि अच्छों की सूरत भी अच्छी असनाए

(१) वहाँ ज़िक्र-ने दुआ के लिए खड़े होना।

दुआ व ज़िक्र में लब्बैक की बार-बार तकरार करो। आज के दिन दुआएं बहुत मक़बूल हैं और दुआ-ए-जामेअ कि ऊपर गुज़री काफ़ी है। चन्द बार उसे कहलो ओर सबसे बेहतर ये कि सारा वक़्त दुरुद-ने ज़िक्र तिलावते कुरऑन में गुज़ारो कि व वअद-ए-हदीस दुआ वालों से ज़्यादा पाओगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दामन पकड़ो, ग़ौसे अअज़म रदियल्लाहु तअला अन्हु से तवस्सुल करो, अपने गुनाह और उसकी क़हारी याद करके बेद की तरह लरज़ो और यक़ीन जानो कि उस की मार से उसी के पास पनाह है। उस से भाग कर कहीं नहीं जा सकते। उसके दर के सिवा कहीं ठिकाना नहीं। लिहाज़ा इन शफ़ीओं का दामन लिए उस के अज़ाब से उसी की पनाह माँगो, और इसी हालात में रहो कि कभी उस के ग़ज़ब की याद से जी कापाँ जाता है। और कभी उस की रहमते आ़म की उम्मीद से मुरझाया दिल निहाल हुआ जाता है।

और यूँ ही तज़रुअ व ज़ारी में रहो यहाँ तक कि आफ़ताब डूब जाए और रात का एक लतीफ़ जुज़ आजाए इस से पहले कूच मनअ है। बअज़ जल्द बाज़ी से ही चल देते हैं। उन का साथ न दो। गुरुब तक ठहरने की ज़रूरत न होती तो अस्त्र जुहर से मिलाकर पढ़ने का हुक्म क्यों होता, और क्या मालूम कि रहमते इलाही किस वक़्त तवज्जोह फ़रमाए अगर तुम्हारे चल

देने के बाद उतरी तो मआज़ल्लाह कैसा ख़सारा है और अगर गुरुब से पहले हुदूदे अरफ़ात से निकल गए जब तो पूरा जुर्म है जुर्मने में कुर्बानी देनी आएगी। बअज़ मतूफ़ यहाँ यूँ डराते हैं कि रात में खतरा है ये एक दो के लिए ठीक है और जब काफ़िला का काफ़िला ठहरेगा तो इन्शाअल्लाह कुछ अन्देशा नहीं।

२३) एक अदब वाजिबुल हिफ़ज़ इस रोज़ का ये है कि अल्लाह तअला के सच्चे वअदों पर भरोसा करके यक़ीन करें कि आज मैं गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ हो गया जैसा जिस दिन माँ के पेट से पैदा हुआ था। अब कोशिश करूँ कि आइन्दा गुनाह न हों और जो दाग़ अल्लाह तअला ने बमहज़ रहमत मेरी पेशानी से धोया है फिर न लगे।

२४) यहाँ ये बातें मकरुह हैं<sup>(९)</sup> गुरुबे आफ़ताब से पहले वकूफ़ छोड़ कर रवानगी जब कि गुरुब तक हुदूदे अरफ़ात से बाहर न हो जाए। वरना हराम है। नमाज़े जुहर व अस्त्र मिलाने के बाद मौक़फ़ को जाने में देर उस वक़्त से गुरुब तक खाने पीने या तवज्जोहे ब-ख़ुदा के सिवा किसी काम में मशगूल होना। कोई दुन्यवी बात करना, गुरुब पर यक़ीन हो जाने के बाद रवानगी में ताख़ीर, मगरिब या इशा अरफ़ात में पढ़ना।

(९) वकूफ़ में नाजाइज़ और मकरुह हैं।

तंबीह :- मौक्रफ़ में छतरी लगाने या किसी तरह साया चाहने से हत्तलमकदूर बचो हाँ जो मजबूर है मअज़ूर है।

## तंबीह

ज़रूरी, ज़रूरी, अशद ज़रूरी

बद निगाही हमेशा हराम है, न कि एहराम में, न कि मौक्रफ़ या मास्जिदिलहराम में, न कि कअबा के सामने, न कि तवाफ़े वैतुलहरम में, ये तुम्हारे बहुत इम्तिहान का मौक्रअ है। औरतों को हुक्म दिया गया है कि यहाँ मुँह न छुपाओ और तुम्हें हुक्म दिया गया है कि उनकी तरफ़ निगाह न करो। यक्रीन जानो कि ये बड़े इज़्जत वाले बादशाह की बाँदियाँ हैं। और इस वक़्त तुम और वो सब ख़ास दरबार में हाज़िर हो, बिला तश्वीह शेर का बच्चा उसकी बग़ल में हो। उस वक़्त कौन उसकी तरफ़ निगाह उठा सकता है। तो अल्लाह वाहिद-  
 १ क़ह्हार की कनीज़ें कि उसके ख़ास दरबार में हाज़िर हैं। उन पर बद निगाही किस क़दर सख़्त होगी। **وَبِذَلِكَ الْمَثَلِ الْأَعْلَىٰ**

हाँ हाँ होशियार ईमान बचाए हुए क़ल्ब-ने निगाह संभाले हुए हरम वो जगह है जहाँ गुनाह के इरादे पर पकड़ा जाता है। और एक गुनाह लाख के बराबर ठहरता है। अल्लाह ख़ैर की तौफ़ीक़ दे। आमीन

## फ़स्ले पंजुम

मिना व मुज़्दलिफ़ा व बाक़ी अफ़ज़ाले हज्ज

- १) जब गुरुबे आफ़ताब का यक़ीन हो जाए फ़ौरन मुज़्दलिफ़ा को चलो और इमाम का साथ अफ़ज़ल है। मगर वो देर करे तो उसका इन्तिज़ार न करो।
- २) रास्ते भर ज़िक़ने दुरुद व दुआ, लब्बैक व ज़ारी व बुका में मसरुफ़ रहो।
- ३) रास्ते में जहाँ गुंजाइश पाओ और अपनी या दुसरे की ईज़ा का एहतमाल न हो उतनी देर उतनी दूर तेज चलो। प्यादा हो ख़्वाह सवार।
- ४) जब मुज़्दलिफ़ा नज़र आए बशर्ते कुदरत प्यादा हो लेना बेहतर है। और नहाकर दाख़िल होना अफ़ज़ल है।
- ५) वहाँ पहुँचकर हत्तल इमकान जब्ले कुज़ह के पास रास्ते से बच कर उतरो वरना जहाँ जगह मिले।
- ६) ग़ालिबन वहाँ पहुँचते-पहुँचते शफ़रक़ डूब जाएगी मग़रिब का वक़्त निकल जाएगा। ऊँट खोलने, अस्बाब उतारने से पहले इमाम के साथ मग़रिब व इशा पढ़ो और अगर वक़्त बाक़ी रहे जब भी अभी मग़रिब हरगिज़ न पढ़ो न अ़रफ़ात में पढ़ो न राह में कि इस दिन यहाँ नमाज़े मग़रिब वक़्ते मग़रिब में पढ़ना गुनाह है। अगर पढ़

लोगे ईशा के वक़्त फिर पढ़नी पड़ेगी। गरज़ यहाँ पहुँचकर मगरिब वक़्ते इशा ब निय्यते अदा न ब निय्यते क़ज़ा। हत्तलइमकान इमाम के साथ उस का सलाम होते ही मअन इशा की जमाअत होगी। ईशा की फ़र्ज़ पढ़ो। उस के बाद मगरिब और इशा की सुन्नतें और वित्र पढ़ो और अगर इमाम के साथ नमाज़ न मिल सके तो अपनी जमाअत कर लो और न हो सके तो तन्हा पढ़ो।

- ७) बाक़ी रात ज़िक्र, लब्बैक, दुरुदो दुआ में गुज़ारो ये बहुत अफ़ज़ल जगह है। और बहुत अफ़ज़ल रात है। ज़िन्दगी हो तो और सोने की बहुत रातें मिलेंगी और यहाँ ये रात खुदा जाने दुबारा किसे मिले और न हो सके तो ख़ैर बा तहारत सो रहो कि फ़ुज़ूल बातों से सोना बेहतर और इतने पहले उठ बैठो कि सुबह चमकने से पहले ज़रूरियात व तहारत से फ़ारिग़ हो लो आज नमाज़े सुब्ह बहुत अँधेरे पढ़ी जाएगी, कोशिश करो कि जमाअते इमाम बल्कि पहली तकबीर फ़ौत न हो कि इशा व सुब्ह जमाअत से पढ़ने वाला पूरी शब बेदारी का सवाब पाता है।
- ८) अब दरबारे अअज़म की दूसरी हाज़री का वक़्त आया । हाँ करम के दरवाज़े खोले गए हैं। कल अरफ़ात में हुकूकुल्लाह मुआफ़ हुए थे। यहाँ हुकूकुल अ़बाद मुआफ़

करने का वअूदा है। मशअरिल हराम में यानी खास पहाड़ी पर और न मिले तो उसके दामन में और न हो सके तो वादि-ए-मुहस्सर के सिवा जहाँ गुंजाइश पाओ वकूफ़ करो और तमाम बातें कि वकूफ़े अरफ़ात में मज़कूर हैं मल्हूज़ रखो।

- ९) जब तुलूअे आफ़ताब में दो रकूअूत पढ़ने का वक़्त रह जाए। इमाम के साथ मिना को चलो और यहाँ सात छोटी-छोटी कंकरियाँ दान-ए-खुर्मा के बराबर पाक जगह से उठाओ तीन बार धो लो किसी पत्थर को तोड़ कर कंकरियाँ न बनाएँ।
- १०) रास्ते भर बदस्तूर ज़िक्र-ने दुआ व दुरुद बकसरत लब्बैक में मशगूल रहो।
- ११) जब वादि-ए-मुहस्सर<sup>(१)</sup> पहुँचों पाँच सौ पैतालीस हाथ बहुत जल्द तेज़ी के साथ चलकर निकल जाओ। मगर वो न तेज़ी जिससे किसी को ईज़ा हो। और इस अर्सा में ये दुआ करते जाओ :-

- 
- (१) ये मिना और मुज़दलिफ़ा के बीच में एक नाला है। दोनों की हुदूद से खारिज मुज़दलिफ़ा से मिना को जाते बाएँ हाथ को जो पहाड़ आता है उसकी चोटी से शुरु होकर पाँच सौ पैतालिस हाथ तक है। यहाँ पर असहाबिल फ़ील आकर ठहरे और उन पर अज़ावे अबाबील उतरा था इस से जल्द गुज़रना और अज़ावे इलाही से पनाह मांगना चाहिए।

तर्जमा :- इलाही अपने ग़ज़ब से हमें क़त्ल न कर और अपने अज़ाब से हमें हिलाक न कर और इससे पहले हमें आफ़ियत दे।

اللَّهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا  
بِغَضَبِكَ وَلَا تَهْلِكْنَا  
بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا  
قَبْلَ ذَٰلِكَ -

- १२) जब मिना नज़र आए वही दुआ पढ़ो। जो कि मक्का से आते मिना को देखकर पढ़ी थी।
- १३) जब मिना पहुँचो सब कामों से पहले<sup>(१)</sup> जमरतुल अक़बा को जाओ जो इधर से पिछला जमरा है और मक्का मुअज़्ज़मा से पहले नाले के वुस्त में सवारी पर जमरा से पाँच हाथ हटे हुए यूँ खड़े हो कि मिना दाहिने हाथ पर और कअूबा बाएं और जमरा की तरफ़ मुँह हो सात कंकरियाँ जुदा जुदा सीधा हाथ ख़ूब उठाकर कि सफ़ेदि-ए-बग़ल ज़ाहिर हो हर एक पर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक़बर कहकर मारो। बेहतर ये है कि कंकरियाँ जमरा तक पहुँचें वरना तीन हाथ के फ़ासिले तक गिरें। इससे ज़ियादा फ़ासिले पर गिरी तो वो शुमार में न आएँगी। पहली कंकरी पर लब्बैक मौकूफ़ करदो।

१४) जब सात पूरी हो जाएं, वहां न ठहरो फ़ौरन ज़िक्र-ने

- (१) मिना और मक्का के बीच में तीन सुतून बने हुए हैं उनको जमरा कहते हैं पहले जो मिना से क़रीब है जमर-ए-ऊला कहलाता है। और बीच का जमर-ए-वुस्ता और आख़ीर का मक्का मुअज़्ज़मा से क़रीब है जमरतुल अक़बा।



दुआ करते पलट आओ।

१५) अब कुर्बानी में मशगूल हो। ये वो कुर्बानी नहीं जो ईद में होती है कि वो मुसाफिर पर असिला नहीं और मुक्रीम मालदार पर वाजिब है। अगरचे हज्ज में हो बल्कि ये हज्ज का शुकराना है कारिन व मुतमत्तेअ पर वाजिब अगरचे फ़कीर<sup>(१)</sup> हो। और मुफ़रद के लिए मुस्तहिब अगरचे ग़नी हो। जानवर की उम्र-ने अजूज़ा में वही शर्तें हैं जो ईद की कुर्बानी में।

१६) ज़िब्ह करना आता हो तो आप ज़िब्ह करो कि सुन्नत है। वरना वक़्ते ज़िब्ह हाज़िर रहो।

१७) रु-ब क़िब्ला लिटाकर खुद भी रु-ब क़िब्ला हो और तकबीर कहते हुए निहायत तेज़ छुरी बहुत जल्द इतनी फेरो कि चारों रंगें कट जाएं। ज़ियादा हाथ न बढ़ाओ कि बे सबब की तकलीफ़ हो।

१८) बेहतर ये है कि वक़्ते ज़िब्ह कुर्बानी वाले जानवर के

(१) **मस्अ़ला** :- मुहताज महज़ जिसकी मिल्क में न कुर्बानी के लाइक कोई जानवर हो न इतना नक़द वा अस्बाब कि उसे बेचकर, कर सके, वो अगर कुर्बानी या तमत्तुअ़ की निय्यत करेगा तो उस पर कुर्बानी के बदले दस रोज़े वाजिब होंगे तीन तो हज्ज के महीनों में यानी यकुम शव्वाल से नवी ज़िलहिज तक एहराम बांधने के बाद इस बीच में जब चाहे रख ले, एक साथ ख्वाह जुदा-जुदा, बेहतर है कि ७,८,९ को हों और बाक़ी सात तेरहवीं के बाद जब चाहे रखे और बेहतर ये है कि पहुँच कर हों।

उसका ज़िब्ह करना मकरुह मगर हलाल ज़िब्ह हो जाएगा। और गले पर एक ही जगह उसे ज़िब्ह करो। जाहिलों में जो मशहूर है कि ऊँट तीन जगह से ज़िब्ह होता है। गलत है और ख़िलाफ़े सुन्नत भी और मुफ्त की अज़ीय्यत मकरुह है।

- २०) किसी ज़बीहा की जब तक सर्द न हो खाल न खींचो, अज़्जा न काटो कि ये ईज़ा है।
- २१) ये कुर्वानी करके अपने और तमाम मुसलमानों के हज्ज व कुर्वानी कुबूल होने की दुआ करो।
- २२) वादे कुर्वानी रु-व क़िब्ला बैठकर मर्द हल्क करें यानी सर मुंडाएँ कि अफ़ज़ल है। या बाल कतरवाएँ कि रुख़सत है। औरतों को हल्क हराम है, एक पोरा बराबर बाल कतरवाएँ।
- २३) हल्क हो या तक्सीर दाहिनी तरफ़ से इब्तिदा करो और उस वक़्त अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द कहते जाओ। वादे फ़रागत भी कहो। सब मुसलमानों की बख़्शिश माँगो।
- २४) बाल दफ़्न करो और हमेशा बदन से जो चीज़ बाल, नाख़ुन, खाल जुदा हो दफ़्न कर दिया करो।
- २५) यहाँ हल्क या तक्सीर से पहले नाख़ुन न कतरवाओ, न

खत बनवाओ।

- २६) अब औरत से सोहबत करने, शहवत से हाथ लगाने, गले लगाने, बोसे लेने, शर्मगाह देखने के सिवा जो कुछ एहराम ने हराम किया था, सब हलाल हो गया।
- २७) अफ़ज़ल ये है कि आज दसवीं ही तारीख़ फ़र्ज़ तवाफ़ के लिए जिसे “तवाफ़ुज़्ज़ियारह” कहते हैं, मक्का मुअज़्ज़मा जाओ बदस्तूर मज़कूर पियादा बा तहारत व सतरे औरत तवाफ़ करो मगर इस तवाफ़ में इज़्तिबाअ नहीं।
- २८) क़ारिन, मुफ़रद, तवाफ़े कुदूम में और मुतमत्तेअ बादे अहरामे हज्ज किसी तवाफ़े नफ़ल में हज्ज के रमल व सई दोनों ख़्वाह सिर्फ़ सई कर चुके हों तो इस तवाफ़ में रमल व सई कुछ न करें और अगर उस में रमल व सई कुछ न किया हो या सिर्फ़ रमल किया हो, जैसे तवाफ़ में किए थे वो उमरा का था। जैसे क़ारिन व मुतमत्तेअ का पहला तवाफ़ या वो तवाफ़ है, तहारत किया था तो इन चारों सूरतों में रमल व सई दोनों इस तवाफ़े फ़र्ज़ में करें।
- २९) कमज़ोर और औरतें अगर भीड़ के सबब दसवीं को न जाएं तो उसके बाद ग्यारव्हीं को अफ़ज़ल है। और उस दिन ये बड़ा नफ़अ है कि मुताफ़ ख़ाली मिलता है। गिन्ती के बीस तीस आदमी होते हैं। औरतों को भी बा

इत्मिनान तमाम हर फेरे में संगे असवद का बोसा मिलता है।

- ३०) जो ग्यारव्हीं को न जाए बारहवीं को कर ले। इस के बाद बिला उज्र ताखीर गुनाह है। जुर्माना में एक कुर्बानी करनी होगी। हाँ मसलन औरत को हैज़ या निफ़ास आगया तो वो उनके ख़त्म होने के बाद करे।
- ३१) बहर हाल बादे तवाफ़ दो रक़अत ज़रूर पढ़ें, इस तवाफ़ से औरतें भी हलाल हो जाएंगी। हज्ज पूरा होगया कि इस का दूसरा रुकन ये तवाफ़ था।
- ३२) दसवीं, ग्यारव्हीं, बारव्हीं रातें मिना में ही बसर करना सुन्नत है। न मुज़्दलिफ़ा में, न मक्का में, न राह में तो जो दस या ग्यारह को तवाफ़ के लिए गया वापस आकार रात मिना में गुज़ारें।
- ३३) ग्यारहवीं तारीख़ बाद नमाज़े जुहर इमाम का ख़ुत्बा सुन कर फिर रमी को चलो, इन अय्याम में रमी, जुमरा ऊला से शुरु करो जो मस्जिदे ख़ीफ़ से क़रीब मुज़्दलिफ़ा की तरफ़ है इस की रमी को राहे मक्का की तरफ़ से आकर चढ़ाई पर चढ़ो कि ये जगह बनिसवते

जमरतुल अक्वा के बुलन्द है। यहाँ रु-ब कअ्वा सात कंकरियाँ बतौर मज़कूर मारकर जुमरा से कुछ आगे बढ़ जाओ और दुआ व इस्तिग़फ़ार में कम से कम बीस आयतें पढ़ने की क़दर मशगूल हो वरना पौन पारा या सूर-ए-बकर पढ़ने की मिक्दार तक।

- ३४) फिर जमरा के वुस्ता में जाकर ऐसा ही करो।
- ३५) फिर जमरतुल अक्वा पर मगर यहाँ रमी कर के न ठहरो। मअन पलट आओ। पलटने में दुआ करो।
- ३६) बअैनिहि इस तरह बारहवीं तारीख़ तीनों जमरे वादे ज़वाल रमी करो। बअूज़ लोग आज दोपहर से पहले रमी करके मक्का मुअज़्ज़मा को चल देते हैं, ये हमारे असल मज़हब के ख़िलाफ़ और एक ज़ईफ़ रिवायत हैं।
- ३७) बारहवीं को रमी करके गुरुबे आफ़ताब से पहले इख़्तियार है कि मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हो जाओ। मगर वादे गुरुब चला जाना मअ्यूब है। अब एक दिन और ठहरना और तेरहवीं को बदस्तूर दोपहर ढले रमी करके मक्का जाना होगा और यही अफ़ज़ल है मगर आम लोग बारहवीं को चले जाते हैं। तो एक रात दिन यहाँ क्रियाम में क़लील जमाअत को वक़्त है।
- ३८) हल्क़ रमी से पहले जाइज़ नहीं।
- ३९) ग्यारहवीं, बारहवीं की रमी दोपहर से पहले असलन

सही नहीं।

- ४०) रमी में ये उमूर मकरुह हैं। रमी में बड़ा पत्थर मारना तोड़कर बड़े पत्थर की कंकरियाँ मारना। जमरह के नीचे जो कंकरियाँ पड़ी हैं उठाकर मारना कि ये मरदूद कंकरियाँ हैं। जो कुबूल होती हैं। क्रियामत के दिन नेकियों के पल्ला में रखने को उठाई जाती हैं। वरना जमरों के गिर्द पहाड़ जमा हो जाते। नापाक कंकरियाँ मारना। सात से ज़्यादा मारना, रमी के लिए जो जिहत मज़कूर हुई उस का ख़िलाफ़ करना, जमरा से पाँच हाथ से कम फ़ासिला पर खड़ा होना ज़ियादा का मज़ाअ़क्रा नहीं। जमरों में ख़िलाफ़े तर्तीब करना, मारने के बदले कंकरी जमरे के पास डाल देना।
- ४१) अख़ीर दिन यानी बारहवीं ख़्वाह तेरहवीं को जब मिना से रुख़सत होकर मक्का मुअज़्ज़मा चलो तो वादिए महसब<sup>(१)</sup> में कि जन्नतुल मुअल्ला के करीब है। सवारी से उतर लो या बे उतरे कुछ देर ठहर कर मशगूले दुआ हो और अफ़ज़ल तो ये है कि इशा तक नमाज़ें यहीं पढ़ो, एक नींद लेकर दाख़िले मक्का मुअज़्ज़मा हो।

---

(१) जन्नतुल मुअल्ला कि मक्का का क़ब्रिस्तान है। इस के पास एक पहाड़ है और दूसरे पहाड़ के सामने मक्का को जाते हुए दाहिने हाथपर नाले के पेट से जुदा है। इन दोनों पहाड़ों के बीच का नाला वादि-ए-महसब है। जन्नतुल मुअल्ला महसब में दाख़िल नहीं।

४२) अब तेरहवीं के बाद जब तक मक्का में ठहरो अपने और अपने पीर, उस्ताद, माँ, बाप, खुसूसन हुजूर पुरनूर सय्येदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और उनके अस्हाब-ने इतरत व हुजुरे गौसे अअज़म रदियल्लाहु तआला अनहुम की तरफ़ से जितने हो सके उमरे करते रहो। तैगम की मक्का मुअज़्ज़मा से शिमाल यानी मदीना तय्येबा की बरफ़ तीन मील फ़ासिला पर है। जाओ, वहाँ से उमरा का एहराम जिस तरह ऊपर बयान हुआ बाँधकर आओ और तवाफ़ो सई, हस्बे दस्तूर कर के हलक़ या तक्सीर कर लो उमरा हो गया। जो हलक़ कर चुका और मसलन उसी दिन दूसरा उमरा किया वो सर पर उस्तरा फिरवा ले, काफ़ी है। यूँ ही वो जिस के सर पर कुदरती बालन न हों।

४३) मक्का मुअज़्ज़मा में कम से कम एक बार ख़त्मे कुरआन मजीद से महरुम न रहे।

४४) जन्नतुल मुअल्ला हाज़िर होकर उम्मुल मोमिनीन खदीजतुल कुबरा व दीगर मदफूनीन की ज़ियारत करे।

४५) मकाने विलादते अक्दस हुजुरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की भी ज़ियारत से मुशरफ़ हो।

४६) हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की क़ब्र की ज़ियारत करें और अबू तालिब की क़ब्र पर न जाओ। यूँ ही जद्दा में जो

लोगों ने हज़रते हव्वा रदियल्लाहु तआला अन्हा का मज़ार कई सौ हाथ का बना रखा है। वहाँ भी न जाओ कि बे असल है।

४७) ओलमा की खिदमत से शरफ़ लो खुसूसन अकाबिर जैसे आज कल हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुल हक़ साहिब मुहाजिर इलाहबादी कि हमीदिया महल के करीब तशरीफ़ फ़रमा और मुसलमानाने हिन्द के लिए रहमते मुजस्सम हैं और हज़रत शैखुल ओलमा मौलान मुहम्मद सईद बा बसील और हज़रत शैखुल अइम्मा मौलाना अहमद अबुलखैर मर्दाद करीबे सफ़ा और हज़रत इमादुस्सुन्नह मौलाना शैख़ सालेह कमाल करीबे बाबुस्सलाम और हज़रत मौलाना सय्येद इस्माईल आफ़न्दी हाफ़िज़े कुतुबुलहरम, हरम शरीफ़ के कुतुब खाने में वग़ैरहुम<sup>(१)</sup> हिफ़ज़ुहुमुल्लाहि तआला।

४८) कअ़बा मुअज़ज़मा की दाख़िली कमाले सआदत 'है। अगर जाइज़ तौर पर नसीब हो मुहर्रम में आम दाख़िली होती है। मगर सख़्त कश्मक़श कमज़ोर मर्द का काम ही नहीं न औरतों को ऐसे हुजूम में जोने की इजाज़त। ज़बरदस्त मर्द अगर आप ईज़ा से बच गया तो औरों को धक्के देकर ईज़ा देगा। और ये जाइज़ नहीं न यूँ हाज़िरी में कुछ ज़ौक़ मिले और ख़ास दाख़िली बे लेन देन मुयस्सर नहीं और इस पर लेना

(१) ये सब हज़रात रूख़सत हो चुके हैं - रदियल्लाहु अन्हुमा।



भी हराम देना भी हराम के ज़रिआ एक मुस्तहब मिला भी तो वो भी हराम हो गया। इन मफ़ासिद से नजात न मिले तो हतीम शरीफ़ की हाज़िरी ग़नीमत जाने। ऊपर गुज़रा कि वो भी कअूबा ही की ज़मीन है और अंगर शायद बन पड़े यूँ कि खुदामे कअूबा से ठहर जाए कि दाख़िली के इवज़ में कुछ न देंगे। इस के बाद या क़ब्ल चाहे हज़ारों रुपए दे दो तो कमाले आदाव ज़ाहिर-ने वातिन की रिआयत से आँखें नीचे किए गर्दन झुकाए गुनाहों पर शरमाते जलाले रब्बुलबैत से लरज़ते काँपते बिस्मिल्लाह कहकर पहले सीधा पाँव बढ़ाकर दाख़िल हो। और सामने की दीवार तक इतना बढ़ो कि तीन हाथ का फ़ासला रहे। वहाँ दो रक़अत नफ़ल ग़ैर वक़्ते मकरुह में पढ़ो कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मुसल्ला है। फिर दीवार पर रुख़सार और मुँह रख कर हम्द-ने दुरुद-ने दुआ में कोशिश करो। यूँ ही निगाहें नीचे किए चारों गोशों पर जाओ और दुआ करो और सुतूनों से चिम्टो और फिर इस दौलत का मिलना और हज्ज-ने ज़ियारत का कुबूल मांगो और यूँ ही आँखें नीचे किए वापस आओ, ऊपर या इधर उधर हरगिज़ न देखो और बड़े फ़ज़ल की उम्मीद करो कि वो फ़रमाता है। जो इस घर में दाख़िल हो वो अमान में है। वल्हम्दुलिल्लाह!

४९) बची हुई बत्ती वग़ैरह जो यहाँ या मदीना तय्येबा में

खुदाम देते हैं। हरगिज़ न लो बल्कि अपने पास से बत्ती  
वहाँ रौशन करके बाक़ी उठा लो।

- ५०) जब अज़मे रुख़सत हो तवाफ़े वदाअ बे रमल-ने सई व  
इज़्तिवाअ बजा लाओ कि बाहर वालों पर वाजिब है।  
हाँ वक़्ते रुख़सत औरत हैज़-ने निफ़ास में हो उस पर  
नहीं। फिर दो रक़अत मक़ामे इब्राहीम में पढ़ो।
- ५१) फिर ज़मज़म पर आकर उसी तरह पानी पियो, वदन  
पर डालो।
- ५२) फिर दरवाज़-ए-कअ़्बा के सामने खड़े होकर आस्तान-  
ए-पाक को बोसा दो, और कुबूल व बार-बार हाज़िरी  
की दुआ मांगो और वही दुआ-ए-जामेअ पढ़ो।
- ५३) फिर मुल्लतज़िम पर आकर ग़िलाफ़े कअ़्बा थाम कर  
उसी तरह चिमटो। ज़िक़-ने दुरुद की और दुआ की  
कसरत करो।
- ५४) फिर हज़रे पाक को बोसा दो और जो आँसू रखते हो  
गिराओ।
- ५५) फिर उल्टे पाँव रुख़-व-कअ़्बा या सीधे हाथ चलने में  
बार-बार फिरकर कअ़्बा को हसरत से देखते, उसकी  
जुदाई पर रोते या रone का मुँह बनाते मस्जिदे करीम  
के दरवाज़े से वायाँ पाँव पहले बढ़ाकर निकलो और  
दुआ-ए-मज़क़ूरा पढ़ो और इसके लिए बेहतर बाबिल

खरुरह है।

- ५६) हैज़ने निफ़ास वाली दरवाज़-ए-मस्जिद पर खड़े होकर कअ़्बा को ब-निगाहे हसरत देखे और दुआ करती पलटे।
- ५७) फिर ब-क़दरे कुदरत फ़ुकरा-ए-मक्का मुअज़्ज़मा पर तसद्दुक़ करके मुतवज्जह सरकारे अअज़्जम मदीना तय्येबा हो व बिल्लाहित्तौफ़ीक़।

## **:-फ़स्ले शशुम:-**

### **जुर्म और उनके कफ़ारे**

इनकी तफ़्सील मोजिबे ततवील और रिसाला मुख्तसर और वक़्त क़लील और जो तरीक़े बतादिए उन पर अमल करना इन्शाअल्लाह तआला जुर्माना से बचने का कफ़ील, लिहाज़ा यहाँ सिर्फ़ इजमालन महदूद मसाइल का बयान होता है।

**तंबीह :-** इस फ़स्ल में जहाँ दम कहेंगे इस से मुराद एक भेड़ या बकरी होगी और बुदना ऊँट या गाय। ये सब जानवर उन्हीं शराइत से हों जो कुर्बानी में हैं। और सदक़ा से मुराद अंग्रेज़ी रुपए से एक सौ पछत्तर रुपए आठ आने भर गेहूँ कि सौ रुपए के सेर से पौने दो सेर हुए। अठन्नी भर ऊपर या उसके दूने जौ या खजूर या उन की क़ीमत।

**मस्त्रला :-** जहाँ दम का हुक्म है। वो जुर्म अगर बीमारी या सख्त गर्मी या शदीद सर्दी या ज़ख्म या फ़ोड़े या जुओं की सख्त ईज़ा के बाइस होगा तो उसे जुर्म ग़ैर इख़्तियारी कहते हैं। इसमें इख़्तियार होगा कि दम के बदले छः मिस्कीनों को एक-एक सदक़ा देदे या तीन रोज़े रख ले और अगर इस में सदक़ा का हुक्म है और ब-मजबूरी किया तो इख़्तियार होगा कि सदक़े के बदले एक रोज़ा रख ले। अब एहकाम सुनिए।

- १) सिला कपड़ा या खुशबू का रंगा चार पहर<sup>(१)</sup> कामिल या लगातार ज़ियादा दिनों पहना तो दम वाजिब है। और चार पहर से कम अगरचे एक लहज़ा<sup>(२)</sup> तो सदक़ा।
- २) अगर दिन को पहना और रात को गर्मी के बाइस उतार डाला या रात को सर्दी के सबब पहना दिन को उतार दिया और बाज़ आने की निय्यत से उतारा। दूसरे दिन फिर पहना तो दूसरा जुर्माना होगा। इसी तरह जितनी बार करे।
- ३) बीमारी के सबब पहना तो जब तक वो बीमारी रहेगी एक जुर्म है। और अगर बीमारी यक़ीनन जाती रही। उसके बाद न उतारा तो ये दूसरा इख़्तियारी जुर्म होगा। और अगर वो बीमारी यक़ीनन जाती रही दूसरी

(१) चार पहर से मुराद एक दिन या रात की मिक़दार है मसलन तुलूअ से गुरुब या गुरुब से तुलूअ या दोपहर से आधी रात या आधी रात से दोपहर तक।

(२) यानी लम्हा भर पहना और फिर उतार डाला जब भी सदक़ा है।

बीमारी मअन शुरु हो गयी और उसमें भी पहनने की ज़रूरत है। जब भी ये दूसरा जुर्म होगा। मगर गैर इख्तियारी।

- ४) बीमारी वगैरह से अगर सर से पाँव तक<sup>(१)</sup> सब कपड़े पहनने की ज़रूरत हुई तो एक ही जुर्म गैर इख्तियारी है। और अगर मसलन ज़रूरत सिर्फ़ इमामा की थी और उसने कुर्ता भी पहना तो दो जुर्म हैं। इमामा का गैर इख्तियारी और कुर्ते का इख्तियारी।
- ५) मर्द सारा सर या चहारुम या मर्द ख्वाह औरत मुँह की टिकली सारी या चहारुम। चार पहर या ज़्यादा लगातार छुपाएं तो दम है और चहारुम से कम चार पहर तक या चार से कम अगरचे सारा सर या मुँह तो सदक्का और चहारुम से कम को चार पहर से कम तक छुपाएँ तो गुनाह है। कफ़़ारा नहीं।
- ६) खुशबू अगर बहुत सी लगाई जिसे लोग देखकर बहुत बताएं। अगरचे उज़्ज के थोड़े ही टुकड़े पर या कोई बड़ा उज़्ज जैसे सर या मुँह या रान या पिंडली पूरा सान दिया गया अगरचे थोड़ी सी खुशबू थोड़े हिस्से में लगाई तो सदक्का है।

- 
- (२) यूँ ही अगर सब कपड़े सिले या खुशबू में रंगे वे ज़रूरत एक साथ पहन ले तो एक जुर्म इख्तियारी है। दो जुर्म जब हों कि बअज़ व ज़रूरत पहने और बअज़ वे ज़रूरत।

**मसूरला :-** संगे असवद पर खुशबू मली जाती है। वो अगर बोसा लेने में ब-हालते एहराम मुँह को बहुत सी लग गई तो दम देना होगा। और थोड़ी सी, सदक्रा।

७) सर पर पतली मेंहदी का खिजाब किया कि बाल न छुपाए। तो एक दम है। अगर गाढ़ी थोपी<sup>(१)</sup> और चार पहर गुजरे तो मर्द पर दो दम<sup>(२)</sup> हैं और चार पहर से कम तो एक सदक्रा<sup>(३)</sup> और एक दम और औरत पर बहर हाल एक दम<sup>(४)</sup> ।

८) एक जलसे में कितने ही बदन पर खुशबू लगाए एक जुर्म और मुख्तलिफ़ जलसों में हर बार नया जुर्मा।

९) थोड़ी<sup>(५)</sup> सी खुशबू बदन के मुतफ़रिर्क हिस्सों पर लगाई अगर जमअ करने से एक बड़े उच्च कामिल की मिक्दार होजाए तो दम वरना सदक्रा।

१०) खुशबू दार सुर्मा तीन या ज़्यादा बार लगाया तो दम

(१) मसूरला यूँ ही पूरी हथेली या तलवे में मेंहदी लगाए तो दम है। औरत हो या मर्द और चारों में एक ही जलसे में लगाई तो एक ही वरना हर जलसे पर एक दम और हाथ या पाँव के किसी हिस्सा पर लगाई तो सदक्रा।

(२) एक सारे उच्च पर खुशबू का दूसरा चार पहर सर छुपाने का।

(३) खुशबू पर दम और चार पहर से कम छुपाने पर सदक्रा।

(४) सिर्फ़ खुशबू का दम है इसलिए कि सर छुपाना तो उसे रखा है।

(५) قيرت به لان الطيب الكثير لا يتقيد بكمال العضو فتنبه - ۱۲/۱۱

वरना सदक्रा।

- ११) अगर खालिस<sup>(१)</sup> खुशबू की चीज़ इतनी खाई कि अक्सर मुँह में लग गई दम है वरना सदक्रा।
- १२) खाने में खुशबू अगर पकते में पड़ी या फ़ना होगई। जब तो कुछ नहीं वरना अगर खुशबू के अज़्ज़ा ज़्यादा हों तो वो खालिस खुशबू के हुक्म में है। और अगर खाने का हिस्सा ज़्यादा है तो आम किताबों में मुतलक़ हुक्म दिया कि इस में कफ़ारा कुछ नहीं, हाँ खुशबू आती हो तो कराहत है।
- १३) पीने की चीज़ में खुशबू मिलाई। अगर खुशबू का हिस्सा ग़ालिब है या तीन बार या ज़्यादा पिया तो दम है वरना सदक्रा।

**मस्त्रला :-** खमीरा तंबाकू को न पीना बेहतर मगर मनअ या कफ़ारा नहीं <sup>(२)</sup>।

- १४) अगर चहारुम सर, या दाढ़ी के बाल, या ज़ियादा, किसी तरह दूर किए तो दम है और कम में सदक्रा।
- १५) अगर चंदुला है या डाढ़ी बहुत हलकी छिदरी तो ये देखें कि इतने बाल उस जगह की चहारुम मिक्दार तक पहुँचते हैं या नहीं।

(१) اقول لم يقف فيه الدم كما قال كثيرون لأننا ان يلتزق باكثر فمه ١٥  
(२) كما حققناه فيما على ردالمختار عقلمنا ١٢٠هـ

- १६) यूँ ही चन्द जगह से दूर किए तो मिलाकर चहारुम की मिक्कदार देखेंगे।
- १७) अगर सारे बदन के बाल एक जलसे में दूर किए तो एक ही जुर्म है और मुख्तलिफ़ जलसे तो हर बार नया जुर्म।
- १८) मूछें अगरचे पूरी हों सिर्फ़ सदक़ा है।
- १९) गर्दन या एक बगल पूरी हो तो दम है। और कम में अगरचे निस्फ़ या ज़ाइद हो सदक़ा। यूँ ही मूए ज़ेरे नाफ़ चहारुम को सब के बराबर ठहराना सिर्फ़ सर और दाढ़ी में है।
- २०) दोनों बगलें पूरी मुंडाए जब भी एक ही दम है।
- २१) सर दाढ़ी और बगल और ज़ेरे नाफ़ के सिवा बाक़ी अज़ा के मुंडाने में सिर्फ़ सदक़ा है।
- २२) मूंडना, कतरना, मोचना से लेना, नूरह लगाना सब का एक हुक्म है।
- २३) औरत अगर सारे या चहारुम सर के बाल एक पोरा बराबर कतरे तो दम है और कम में सदक़ा।
- २४) वुज़ू करने या खुजाने या कंधी करने में जो बाल गिरे उस पर भी पूरा सदक़ा है। और बअज़ ने कहा दो तीन बाल तक हर बाल के लिए एक मुठी अनाज या एक



टुकड़ा रोटी या एक छुहारा।

- २५) बाल आप गिर जाए तो बे उसके हाथ लगाए या बीमारी से तमाम बाल गिर पड़ें तो कुछ नहीं।
- २६) एक हाथ एक पाँव के पाँचों नाखुन कतरे या बीसों एक साथ तो एक दम है। और अगर किसी हाथ पाँव के पूरे पाँच न कतरे तो हर नाखुन पर एक सदक्रा। यहाँ तक कि अगर चारों हाथ पाँव के चार-चार कतरे तो सोलह सदक्रा दे। मगर ये कि सदक्रों की कीमत एक दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम करले।
- २७) अगर एक जलसे में एक हाथ या पाँव के कतरे दूसरे में दूसरे के तो दो दम दे यूँ ही चार जलसे में चारों के तो चार दम<sup>(१)</sup> दे।
- २८) कोई नाखुन टूट गया कि अब उगने के काबिल न रहा, उसका बक्रिया उसने काट लिया तो कुछ नहीं।
- २९) शहवत के साथ बसने कनार व मसास में दम (१) है। अगरचे इन्ज़ाल न हो और बिला शहवत में कुछ नहीं।
- (१) **मस्अत्ला** :- मर्द के इन अफ़आल से औरत को लज़ज़त आए तो वो भी दम दे।
- ३०) अन्दामे निहानी पर निगाह करने से कुछ नहीं, अगरचे
- (१) यहाँ भी जलसा का एअ्तवार चाहिए एक जलसा में एक बाल या कई टूटें तो एक सदक्रा और मुतअदिद जलसों में तो मुतअदिद।

इन्ज़ाल हो जाए, मकरुह ज़रूर है।

- ३१) जलक़ से इन्ज़ाल हो जाए तो दम है, वरना मकरुह है।
- ३२) तवाफ़े फ़र्ज़े कुल या अक्सर जनाबत या हैज़ने निफ़ास में किया तो बुदना है और बे वुजू तो दम है और पहली सूरत में तहारत के साथ इस का इआदा वाजिब दूसरी में मुस्तहब।
- ३३) निस्फ़ से कम फ़ेरे बे तहारत किए तो हर फ़ेरे के बदले एक सदक़ा।
- ३४) तवाफ़े फ़र्ज़े कुल या अक्सर बिला उज़्र अपने पाँव चल कर न किया बल्कि सवारी या गोद में बैठे-बैठे।
- ३५) या बे सतरे औरत किया। मसलन औरत की चहारुम कलाई या चहारुम सर के बाल खुले थे।
- ३६) या कअ़बा को दाहिने हाथ पर ले के उल्टा किया।
- ३७) या इसमें हतीम के अन्दर से होकर गुज़रा।
- ३८) या बारहवीं के बाद किया तो इन पाँचों सूरतों में दम दे।
- ३९) इस के चार से कम फ़ेरे बिल्कुल न किए तो दम दे और बारहवीं के बाद किए तो हर फ़ेरे पर सदक़ा दे।
- ४०) तवाफ़े फ़र्ज़ के सिवा और कोई तवाफ़ नापाकी में किया

तो दम और बे वुजू तो सदक़ा।

- ४१) फ़र्ज़ वग़ैरह कोई तवाफ़ हो जिसे नाक़िस तौर पर किया कि कफ़़ारा लाज़िम हुआ, जब कामिल इआदा कर लिया कफ़़ारा उतर गया। मगर बारहवीं के होने से जो नुक़सान तवाफ़े फ़र्ज़ के सिवा किसी फेरे में आया। इसका इआदा नामुमकिन, बारहवीं तो गुज़र गई।
- ४२) नजिस कपड़ों से तवाफ़ मकरूह है, कफ़़ारा नहीं।
- ४३) सई के चार फेरे या ज़्यादा बिला उज़्र अस्ता न किए। या सवारी पर किए तो दम दे और हज्ज हो गया और चार से कम में हर फेरे पर सदक़ा दे।
- ४४) तवाफ़ से पहले सई करली। फेरे न करेगा तो दम लाज़िम।
- ४५) दसवीं की सुबह बिला उज़्र मुज़्दलिफ़ा में वुकूफ़ न किया तो दम दे। हाँ कमज़ोर या औरत बख़ौफ़े ज़हमत तर्क करे तो जुर्माना नहीं।
- ४६) हल़्क़, हरम में न किया, हुदूदे हरम से बाहर किया या बारहवीं के बाद किया तो दम दे।
- ४७) रमी से पहले हल़्क़ कर लिया तो दम दे।
- ४८) क़ारिन या मुतमत्तेअ रमी से पहले कुर्बानी या

कुर्बानी से पहले हल्क करें तो दम दें।

- ४९) अगर रमी किसी दिन असला न की।
- ५०) या किसी एक दिन की बिल्कुल या अक्सर तर्क कर दी।  
मसलन दसवीं को तीन कंकरियों तक मारें या ग्यारहवीं को दस कंकरियों तक।
- ५१) या किसी एक दिन की बिल्कुल या अक्सर उसके बाद दूसरे दिन की तो इन तीनों सूरतों में दम दे। और अगर किसी दिन की रमी उस के बाद आने वाली रात में कर ली तो कफ़ारा नहीं।
- ५२) अगर किसी दिन के निस्फ़ से कम रमी मसलन दसवीं की तीन कंकरिया और दिन की दस बिल्कुल छोड़ दीं। या दूसरे दिन की तो हर कंकरियों पर एक सदक़ा दे। इन सदक़ों की क़ीमत दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम करले।
- ५३) एहराम वाले ने किसी दूसरे के बाल मूँडे या नाखुन कतरे अगर वो भी एहराम में है तो ये सदक़ा दे और वो सदक़ा या दम उसी तफ़सील पर कि उपर गुज़री और अगर वो एहराम में नहीं तो कुछ ख़ैरात कर दे। अगरचे एक मुठ्ठी और वो कुछ नहीं।
- ५४) और अगर उसको सिले कपड़े पहनाए या खुशबू इस तरह लगाई कि अपने न लगी तो उस पर कफ़ारा

कुछ नहीं। हाँ गुनाह होगा। अगर वो भी एहराम में था और वो हस्बे तफ्सील मज़कूर दम या सदका देगा।

५५) वुकूफ़े अरफ़ा से पहले जिमाअ किया तो हज्ज न हुआ उसे हज्ज ही की तरह पूरा करके दम दे। और फिर फ़ौरन ही साले आइन्दा उस की क़ज़ा करले। औरत भी एहरामे हज्ज में थी तो उस पर भी यही लाज़िम है और मुनासिब है कि हज्ज के एहराम से ख़त्म तक दोनों इस तरह जुदा रहें कि एक दूसरे को न देखें। अगर ख़ौफ़ हो कि फिर इस बला में पड़ जाएंगे और वुकूफ़ के बाद सोहबत करने से हज्ज तो न जाएगा मगर हल्क़-ने तवाफ़ से पहले किया तो बुदना दे और दोनों के बीच में किया तो दम और बेह्तर अब<sup>(९)</sup> भी बुदना है और दोनों के बाद कुछ नहीं।

५६) उमरे में तवाफ़ के चार फेरे से पहले जिमाअ किया तो उमरा जाता रहा दम दे। और उमरा फिर करें और चार के बाद तो दम दे उमरा सही है।

५७) अपनी जूँ अपने बदन या कपड़ों में मारी या फेंक दी तो एक में रोटी का टुकड़ा दे और दो हों तो मुठ्ठी भर अनाज और ज़्यादा में सदका दे।

५८) जूँ मारने को सर या कपड़ा धोया। धूप में डाला। जब भी यही कफ़ारे जो खुद क़त्ल में थे।

(९)

ذکرته خروجاً عن خلاف قوی ۱۲ منہ

५९) यूँही दूसरे ने उस के कहने या इशारा करने से उस की जूँ को मारा जब भी उस पर कफ़ारा है। अगरचे वो दूसरा एहराम में न हो।

६०) ज़मीन वग़ैरा पर गिरी हुई जूँ या दूसरे के बदन या कपड़ों की मारने में उस पर कुछ नहीं अगरचे वो दूसरा भी एहराम में हो।

**मस्त्रला :-** जहाँ एक दम या सद्का है कारिन पर दो हैं।

**मस्त्रला :-** कफ़ारा की कुर्बानी या कारिन व मुतमत्तेअ के शुकराना की ग़ैर हरम में नहीं हो सकती मगर शुकराना की कुर्बानी से आप खाए, ग़नी को खिलाए, और कफ़ारा की सिर्फ़ मुहताजों का हक़ है।

**नसीहत :-** कफ़ारे इस लिए हैं कि भूल चूक से या सोने में या मजबूरी में जुर्म हों तो कफ़ारा से पाक हो जाएं न इस लिए कि जान बूझकर बिला उज़्र जुर्म करो और कहो कि कफ़ारा दे देंगे। देना तो जब भी आएगा मगर कसदन हुक्मे इलाही की मुखालफ़त सख़्त है। वल इयाज़े बिल्लाहि तआला हक्क़ सुब्हानुहू तौफ़ीके ताअत अता फ़रमा कर मदीना तय्येबा की ज़ियारत कराए। आमीन

## फ़स्ले हफ़्तुम

हाज़िरी-ए-सरकारे अअज़म मदीना तय्येबा हुज़ूर हबीबे  
अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

- १) ज़ियारते अक्दस करीब ब-वाजिब है। बहुत लोग दोस्त बनकर तरह तरह डराते हैं। राह में खतरा है, वहाँ वीमारी है, खबर दार किसी की न सुनो और हरगिज महरुमी का दाग़ लेकर न पलटो, जान एक दिन जानी ज़रूर है। इससे क्या बेहतर कि उनकी राह में जाए। और तजरबा है कि जो उन का दामन थाम लेता है। उसे अपने साए में ब -आराम ले जाते हैं। कील का खटका नहीं रहता है। वल्हम्दु लिल्लाह
- २) हाज़िरी में खालिस ज़ियारते अक्दस की निय्यत करो। यहाँ तक कि इमाम इब्नुल हुमाम फ़रमाते हैं। इस बार मस्जिदे शरीफ़ की नीय्यत भी शरीक न करे।
- ३) रास्ते भर दुरुदो ज़िक्र शरीफ़ में डूब जाओ।
- ४) जब हरमे मदीना शरीफ़ नज़र आए बेहतर ये कि पियादा हो लो। रोते, सर झुकाए, आँखें नीचे किए और हो सके तो नंगे पाँव चलो बल्कि “जा-ए-सरस्त ई कि तू पा मी निही, पाए न बीनी कि कुजा मी निही”

हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना

अरे सर का मौक़अ है ओ जाने वाले

- ५) जब कुब्ब-ए-अनवर पर निगाह पड़े दुरुद-ने सलाम की कसरत करो।
- ६) जब शहरे अक़दस तक पहुँचो जलाल-ने जमाले महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तसव्युर में गर्क हो जाओ।
- ७) हाज़िरी-ए-मसजिद से पहले तमाम ज़रूरियात जिन का लगाव दिल बटने का बाइस हो निहायत जल्द फ़ारिग़ हो। इन के सिवा किसी बेकार बात में मशगूल न हो। मअन वुजू व मिसवाक करो और गुस्ल करके बेहतर सफ़ेद व पाकीज़ा कपड़े पहनो और नए बेहतर। सुर्मा और खुशबू लगाओ और मुश्क अफ़ज़ल ।
- ८) अब फ़ौरन आस्तान-ए-अक़दस की तरफ़ निहायत खुशूअ व खुजूअ से मुतवज्जह हो, रोना न आए तो रोने का मुँह बनाओ और दिल को ब-ज़ोर रोने पर लाओ। और अपनी संगदिली से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़ इल्तिजा करो।
- ९) जब दरे मस्जिद पर हाज़िर हो सलात-ने सलाम अर्ज़ करके थोड़ा ठहरो, जैसे सरकार से हाज़िरी की इजाज़त मांगते हो। बिस्मिल्लाह कहकर सीधा पाँव पहले रख कर हमा तन अदब होकर दाख़िल हो।
- १०) उस वक़्त जो अदब-ने तअज़ीम फ़र्ज़ है, हर मुसलमान



का दिल जानता है। आँख, कान, ज़बान, हाथ, पाँव दिल सब खयाले ग़ैर से पाक करो। मस्जिदे अक्वदस के नक्शे-निगार न देखो।

११) अगर कोई ऐसा सामने आए, जिस से सलाम, कलाम ज़रूर हो तो जहाँ तक बने कतराओ, वर्ना ज़रूरत से ज़्यादा न बढ़ो, फिर भी दिल सरकार ही की तरफ़ हो।

१२) हरगिज हरगिज मस्जिदे अक्वदस में कोई हरफ़ चिल्ला कर न निकले।

१३) यक्रीन जानो कि हुज़ूरे अक्वदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, सच्ची, हक़ीक़ी, दुन्यावी, जिस्मानी, हयात से वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे वफ़ात शरीफ़ से पहले थे। उनकी और तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलात वसल्लम की मौत सिर्फ़ वअद-ए-ख़ुदा की तस्दीक़ को एक आन के लिए थी। उन का इन्तिक़ाल सिर्फ़ नज़रे अ़वाम से छुप जाना है।

इमाम मुहम्मद इब्ने हाज मक्की<sup>(१)</sup> और इमाम अहमद क्रिस्तलानी मवाहिबे लदुन्निया में और अइम्माए दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन फ़रमाते हैं :-

---

(१) देखिए मदख़िल जिल्द अब्वल मतबअे मिस्र पृ. २१५

**तर्जमा :-** हुजूरु अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हयात-ने वफ़ात में इस बात में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वो अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उनकी निय्यतों उनके इरादों के दिलों के खयालों को पहचानते हैं और ये सब हुजूर पर ऐसा रौशन है जिसमें असलन पोशीदगी नहीं।

لَا فَرْقَ بَيْنَ مَوْتِهِ  
وَحَيَاتِهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مُشَاهَدَتِهِ  
لِأُمَّتِهِ وَمَعْرِفَتِهِ بِأَحْوَالِهِمْ  
وَنِيَّاتِهِمْ وَعَزَائِهِمْ  
وَأَخْوَالِهِمْ وَذَلِكَ  
عِنْدَ الْأَجَلِ لِأَخْفَاءِ بَيْتِهِ

इमाम रहमतुल्लाह तलमीज़ इमाम मुहक्किक़ इब्नुलहुमाम मनसक<sup>(१)</sup> मुतवस्सित और अली क़ारी मक्की इसकी शरह मस्लके<sup>(२)</sup> मुन्क़सित में फ़रमाते हैं :-

**तर्जमा :-** बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तेरी हाज़िरी और तेरे खड़े होने और तेरे तमाम अफ़आल-ने अहवाल व कूच-ने मक़ाम से आगाह हैं।

إِنَّهُ صَلَّى اللهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيمٌ  
بِحُضُورِكَ وَقِيَامِكَ وَسَلَامِكَ  
أَيَّ بِجَمِيعِ أَحْوَالِكَ وَأَفْعَالِكَ  
وَأَرْتِحَالِكَ وَمَقَامِكَ ط

(१) देखो शरहे मवाहिब अल्लामा ज़रक़ानी मतबअे मिस्री जिल्द ८ पृ३४८.

(२) देखो शरहे लबाब मतबअे मेरी मिस्र.

१४) अब अगर जमाअत काएम हो शरीक हो जाओ कि इस में तहय्येतुलमस्जिद भी अदा हो जाएगी वरना अगर ग़लब-ए-शौक़ मुहलत दे और उस वक़्त कराहत न हो तो दो रक़अत तहय्येतुल मस्जिद व शुकरान-ए-हाज़िरी-ए-दरबारे अक्दस सिर्फ, “कुल या” और “कुल” से बहुत हलकी मगर रिआयते सुन्नत के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नमाज़ पढ़ने की जगह जहाँ अब वुस्ते मस्जिदे करीम में मेहराब बनी है। और वहाँ न मिले तो जहाँ तक हो सके उस के नज़दीक अदा करो। फिर सज्दए शुक्र में गिरो और दुआ करो कि इलाही अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का अदब और उनका और अपना कुबूल नसीब करा। आमीन।

१५) अब कमाले अदब में डूबे हुए गरदन झुकाए आँखें नीची किए, लरज़ते, काँपते, गुनाहों की नदामत से पसीना-पसीना होते हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अफ़व व करम की उम्मीद रखते हुज़ूर वाला की पाई जानिब यानी मशिरक की तरफ़ से मवाजेह आलिया में हाज़िर हो कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मज़ारे अनवर में रु-ब क़िब्ला जलवा फ़रमा हैं इस सम्त से हाज़िर हो के हुज़ूर की निगाहे बेकस पनाह तुम्हारी तरफ़ होगी। और ये बात, तुम्हारे लिए दोनों जहान में काफ़ी है। वलहम्दुलिल्लाह

१६) अब कमाले-अदब-ने व हैबत-ने खौफ़ व उम्मीद के साथ ज़ेरे किन्दील उस चाँदी की कील के सामने जो हुजर-ए-मुत्हहरा की जुनूबी दीवार में चेहरे-ए-अनवर के मुक़ाबिल लगी है। कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले से किब्ला को पीठ और मज़ारे अनवर को मुँह करके नमाज़ की तरह हाथ बाँधकर खड़े हो। लबाब-ने शरह, लबाब-ने इख़्तियार, शरहे मुख़्तार फ़ताव-ए-अ़ालमगीरी वग़ैरहा मोअ्तमद किताबों में इस अदब की तसरीह फ़रमाई कि :- **يَقِفُ كَمَا يَقِفُ فِي الصَّلَاةِ**

हुज़ूर के सामने ऐसा खड़ा हो जैसा नमाज़ में होता है। ये इबारत अ़ालमगीरी व इख़्तियार की है। और लबाब में फ़रमाया :-

**وَاضْعًا يَمِينَهُ عَلَى شِمَالِهِ** दस्त बस्ता दाहिना हाथ बाईं पर रख कर खड़ा हो।

१७) ख़बरदार जाली शरीफ़ को बोसा देने या हाथ लगाने से बचो कि ख़िलाफ़े अदब है। बल्कि चार हाथ फ़ासिले से ज़ियादा क़रीब न जाओ। ये उनकी रहमत क्या कम है कि तुमको अपने हुज़ूर बुलाया। अपने मवाजहे अक़्दस में जगह बख़्शी। उन की निगाहे करीम अगरचे हर जगह तुम्हारी तरफ़ थी अब ख़ुसूसियत और इस दर्जा कुर्ब के साथ है।

१८) अल्हम्दु लिल्लाह अब कि दिल की तरह तुम्हारा मुँह भी

उस पाक जाली की तरफ़ हो गया। जो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के महबूबे अज़ीमुश्शान सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आरामगाह है। निहायत अदब-ने वक्रार के साथ, ब-आवाज़े हज़ीं व सूरते दर्दे आगीं व दिले शर्मनाक व जिगर चाक-चाक मोअ्तदिल आवाज़ से न बुलन्द-ने सख्त (की उन के हुज़ूर आवाज़ बुलन्द करने से अमल अकारत हो जाते हैं) न निहायत नर्म-ने पस्त (कि सुन्नत के ख़िलाफ़ है अगरचे वो तुम्हारे दिलों के खतरों तक से आगाह हैं जैसा कि अभी तसरीहाते अइम्मा से गुजरा)

मुजरा व तस्लीम बजा लाओ और अर्ज़ करो :-

السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ  
عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ط السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ ط  
السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيعَ الْمُنْذَرِينَ ط السَّلَامُ عَلَيْكَ  
وَعَلَى الْإِلِكِ وَأَصْحَابِكَ وَأُمَّتِكَ أَجْمَعِينَ ط

- १९) जहाँ तक मुमकीन हो और ज़बान यारी दे और मलाल-ने कसल न हो सलातो सलाम की कसरत करो। हुज़ूर से अपने और अपने माँ बाप, पीर, उस्ताद, अवलाद, अज़ीज़ों, दोस्तों और सब मुसलमानों के लिए शफ़ाअत माँगो बार-बार अर्ज़ करो :-
- أَسْأَلُكَ الشَّفَاعَةَ  
يَا رَسُولَ اللَّهِ ط

२०) फिर अगर किसी ने अर्ज़ सलाम की वसीयत की बजा लाओ। शरअन इसका हुक्म है। और ये फ़कीर ज़लील उन मुसलमानों को जो इस रिसाला को देखें वसीयत करता है कि जब उन्हें हाज़िरी-ए-बारगाह नसीब हो फ़कीर की ज़िन्दगी में या बाद कम अज़ कम तीन बार मवाजहे अक्दस में ज़रूर ये अल्फ़ाज़ अर्ज़ करके इस ना लाइक़, नंगे ख़लाइक़ पर एहसान फ़रमाएं। अल्लाह उन को दोनों जहान में जज़ा बख़्शे। आमीन.

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَعَلَى  
 الْكَافَّةِ مِنْ ذُرِّيَّتِكَ فِي كُلِّ انِّ وَلِحُظَّةٍ عَدَدِ كُلِّ  
 ذَرَّةٍ أَلْفِ أَلْفِ مَرَّةٍ مِنْ عُبَيْدِكَ أَحْمَدُ رَضَا  
 ابْنُ تَقِيٍّ عَلِيٌّ يَسْأَلُكَ الشَّفَاعَةَ فَاشْفَعْ لَهُ  
 لِلْمُسْلِمِينَ ÷

२१) फिर अपने दाहिने हाथ यानी मशरिक की तरफ़ हाथ भर हट कर हज़रते सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु के चेहरे-ए-नूरानी के सामने खड़े होकर अर्ज़ करो

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللَّهِ السَّلَامُ  
 عَلَيْكَ يَا وَزِيرَ رَسُولِ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ  
 يَا صَاحِبَ رَسُولِ اللَّهِ فِي الْغَارِ وَرَحْمَةَ اللَّهِ وَبَرَكَاتَهُ.

२२) फिर इतना ही और हट कर हज़रते फ़ारुके अअज़म रदियल्लाहु तअला अन्हु के रु-बरु-खड़े होकर अर्ज़ करो :-  
 السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ وَالسَّلَامُ  
 عَلَيْكَ يَا مُتَمِّمَ الْأَرْبَعِينَ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِزَّ الْإِسْلَامِ  
 وَالْمُسْلِمِينَ وَرَحْمَةَ اللَّهِ وَبَرَكَاتَهُ :

२३) फिर बालिशत भर मगरिब की तरफ़ पलटो और सिद्दीक़-ने फ़ारुक़ के दर्मियान खड़े होकर अर्ज़ करो :-  
 السَّلَامُ عَلَيْهَا يَا خَلِيفَتِي رَسُولِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ  
 عَلَيْكُمْ أَيَا وَزِيْرَتِي رَسُولِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَيَا ضَجِيْعِي  
 رَسُولِ اللَّهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ أَسْأَلُكُمْ الشَّفَاعَةَ  
 عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْكُمْ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

२४) ये सब हाज़िरियाँ महले इजाबत हैं। दुआ में कोशिश करो। दुआ-ए-जामेअ करो। दुरुद पर क़नाअत बेहतर।

२५) फिर मिंबरे अतहर के क़रीब दुआ मांगो।

२६) फिर रौज़-ए-जन्नत में (यानी जो जगह मिंबर व हुजर-ए मुनव्वरा के दर्मियान है इसे हदीस में जन्नत की क्यारी फ़रमाया) आकर दो रक़अत नफ़ल ग़ैर वक़्ते

मकरुह में पढ़कर दुआ करो।

- २७) यूँ ही मस्जिद शरीफ़ के हर सुतून के पास नमाज़ पढ़ो, दुआँ मांगो कि महले बरकात हैं। खुसूसन बअज़ में खास खुसूसियत है।
- २८) जब तक मदीना तय्येबा की हाज़िरी नसीब हो। एक साँस बेकार न जाने दो ज़रूरियात के सिवा अक्सर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में बा तहारत हाज़िर रहो। नमाज़-ते तिलावत व दुरुद में वक़्त गुज़ारो दुनिया की बात किसी मस्जिद में नहीं करनी चाहिए, न यहाँ।
- २९) हमेशा हर मस्जिद में जाते वक़्त एअ्तिकाफ़ की निय्यत करलो। यहाँ तुम्हारी याद दहानी ही को दरवाज़ा से बढ़ते ही ये कुतबा मिलेगा :- **نَوَيْتُ سُنَّةَ الْأَعْتِكَافِ**
- ३०) मदीना तय्येबा में रोज़ा नसीब हो। खुसूसन गर्मी में तो क्या कहना कि इस पर वअूद-ए-शफ़ाअत है।
- ३१) यहाँ हर नेकी एक की पचास हज़ार लिखी जाती हैं लिहाज़ा इबादत में ज़ियादा कोशिश करो खाने पीने की कमी ज़रूर करो।
- ३२) कुरऑन मजीद का कम से कम एक खत्म यहाँ और हतीमे कअूबा मुअज़ज़मा में कर लो।



- ३३) रौज़-ए-अनवर पर नज़र भी इबादत है, जैसे कअ़्बा मुअज़्ज़मा या कुरऑन मजीद का देखना तो अदब के साथ इस की कसरत करो और दुरुद-ने सलाम अर्ज़ करो।
- ३४) पजंगाना या कम अज़ कम सुब्ह-ने शाम मवाजह शरीफ़ में अर्ज़े सलाम के लिए हाज़िर हो।
- ३५) शहर में ख़्वाह शहर से बाहर जहाँ कहीं गुबंदे मुबारक पर नज़र पड़े फ़ौरन दस्त बस्ता उधर मुहँ करके सलात-ने सलाम अर्ज़ करो। बिग़ैर इस के हरगिज़ न गुज़रो कि ख़िलाफ़े अदब है।
- ३६) तर्के जमाअत बिला उज़्र हर जगह गुनाह है। और कई बार हो तो सख़्त हुराम व गुनाहे कबीरा और यहाँ तो गुनाह के अलावा कैसी सख़्त महरुमी है। वलइयाज़ बिल्लाहि तअ़ाला, सही हदीस में हैं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम फ़रमाते है जिससे मेरी मस्जिद में (४०) नमाज़ें फ़ौत न हों उसके लिए दोज़ख़-ने निफ़ाक़ से आज़ादियाँ लिखी जाएँ।
- ३७) क़ब्रे करीम को हरगिज़ पीठ न करो और हत्तल इम्कान नमाज़ में भी ऐसी जगह खड़े हो कि पीठ करनी न पड़े।
- ३८) रौज़-ए-अक्दस का न तवाफ़ करो न सज्दा न इतना झुकना कि रुकूअ के बराबर हो। रसूलुल्लाह तअ़ाला

अल्लैहि वसल्लम की तअज़ीम उनकी इताअत में है।

- ३९) बक्रीअ व उहुद व क़बा की ज़ियारत सुन्नत है। मस्जिदे क़बा की दो रक़अत का सवाब एक उमरे के बराबर है। और चाहो तो यहीं हाज़िर रहो। सय्येदी इब्ने अबी जुमरा कुदससिर्खूहू जब हाज़िरे हुज़ूर होते तो आठों पहर बराबर हुज़ूरी में खड़े रहते। एक दिन बक्रीअ वग़ैरह की ज़ियारत का ख़याल आया। फिर फ़रमाया ये है अल्लाह का दरवाज़ा भीक मांगने वालों के लिए खुला हुआ इसे छोड़कर कहाँ जाऊँ।

“सर ईजा, सज्दा ईजा, बन्दगी ईजा, करार ईजा”

- ४०) वक़्ते रुख़सत मवाजेह अनवर में हाज़िर हो और हुज़ूर से बार बार इस नेअ्मत की अता का सवाल करो और तमाम आदाब कि कअूबा मुअज़्ज़मा से रुख़सत में गुज़रे मलहूज़ रखो और सच्चे दिल से दुआ करो कि इलाही ईमान व सुन्नत पर मदीना तय्येबा में मरना और बक्रीअे पाक में दफ़न होना नसीब हो :-

اللَّهُمَّ ارزُقْنَا امِينًا - امِينًا - يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ  
وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ  
وَابْنِهِ وَحِزْبِهِ اَجْمَعِينَ امِينًا - وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ  
العَالَمِينَ ط

## जरूरी तंबीह

रिसाला में जा-बजा नमाज़े बा जमाअत की ताकीद है, ये रिसाला उस वक़्त लिखा गया था जब कि हिजाज़े मुक़दस में शरीफ़े मक्का की हुकूमत थी और उन्हीं के मुकर्रर कर्दा सुन्नी अइम्म-ए-मसाजिद थे। अब जब कि सऊदिया की हुकूमत है और उसी के मुकर्रर करदा अइम्म-ए-मसाजिद हैं। लिहाज़ा जब तक तहक़ीक़ न हो जाए कि फुलां मस्जिद के इमाम सही हुल अक़ीदा हैं उस वक़्त तक अपनी जमाअत अलाहदा करें।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيَّ وَعَلَىٰ النَّبِيِّ الْاَكْبَرِ الْاَمِيْنِ

وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ وَوَالسَّلَامُ

صَلَاةٌ وَسَلَامٌ عَلَيْكَ

يَا سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

तवाफ़ व सई

और

सफ़ा व मरवा की दुआएं

मुल्लजम की दुआ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह ये घर तेरा घर है और हरम तेरा हरम है और तेरा ही अमन है और जहन्नम से तेरी पनाह मांगने वाले की ये जगह है तू मुझ को जहन्नम से पनाह दे ऐ अल्लाह जो तूने मुझ को दिया मुझे उस पर क़ानेअ कर दे, और मेरे लिए उसमें बरकत दे और हर ग़ायब पर ख़ैर के साथ तू ख़लीफ़ा होजा। अल्लाह के सिवा कोई मअ्वूद नहीं जो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी के लिए मुल्क है उसी के

اللَّهُمَّ هَذَا الْبَيْتُ  
بَيْتُكَ وَالْحَرَمُ حَرَمُكَ  
وَالْأَمْنُ مِنْ أَمْنِكَ وَهَذَا مَقَامُ  
الْعَائِدِ بِكَ مِنَ النَّارِ فَاجِرْنِي  
مِنَ النَّارِ اللَّهُمَّ قِنِّعْنِي  
بِمَا رَزَقْتَنِي وَبَارِكْ لِي فِيهِ  
وَاحْتَفِ عَلَى كُلِّ غَائِبَةٍ  
بِخَيْرٍ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ  
لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ  
وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى  
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

लिए हम्द है और हर शय  
पर कादिर है।

## रुकने इराक़ी की दुआ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मैं तेरी  
पनाह मांगता हूँ। शक और  
शिक और इख़्तिलाफ़ने निफ़ाक़  
से और माल व अहल-ने  
अवलाद में वापस होकर बुरी  
बात देखने से।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ  
مِنَ الشَّكِّ وَالشَّرِكِ  
وَالشَّقَاقِ وَالنِّفَاقِ  
وَسُوءِ الْأَخْدَاقِ وَسُوءِ  
الْمُنْقَلَبِ فِي الْعَالِ وَالْأَهْلِ  
وَالْوَالِدِطِ

## मीज़ाबे रहमत की दुआ

तर्जमा :- इलाही तू मुझको  
अपने अर्श के साए में रख  
जिस दिन तेरे साए के सिवा  
कोई साया नहीं और तेरी  
ज़ात के सिवा कोई बाक़ी  
नहीं और अपने नबी मुहम्मद  
सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि  
वसल्लम के हौज़ से मुझे  
ख़ुशगवार पानी पिला कि  
उसके बाद कभी प्यास न  
लगे।

اللَّهُمَّ اظْلِمْنِي  
تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ  
لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّكَ وَلَا بَاقِيَ  
إِلَّا وَجْهُكَ وَأَسْقِنِي  
مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ  
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
شُرْبَةَ هَنِيئَةٍ لَا أُظْمَأُ  
بَعْدَهَا أَبَدًا.

## रुकने शामी की दुआ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह तू हज्ज को मबरुर कर और सई मशकूर कर और गुनाह को बख्श दे और इसको वो तिजारत कर दे जो हिलाक न हो । ऐ सीनों की बातें जानने वाले मुझ को तारीकियों से नूर की तरफ निकाल।

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا  
مَبْرُورًا وَسَعْيًا مَشْكُورًا  
وَذَنْبًا مَغْفُورًا وَتِجَارَةً  
لَنْ تَبُورَ يَا عَالِمَ مَا فِي  
الصُّدُورِ أَخْرِجْ بَنِي  
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ

## रुकने यमानी की दुआ

तर्जमा :- इलाही तहकीक में मांगता हूँ तुझ से मुआफी और आफ्रियत बीच दीन और दुनिया और आखिरत के। (मकामे मुस्तजाब में दुआए जामेअ पढ़ो।)

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ  
العَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّينِ  
وَالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ط

## सफ़ा की दुआ

तर्जमा :- मैं उस से शुरु करता हूँ जिसको अल्लाह ने पहले ज़िक्र किया बेशक सफ़ा व मरवा अल्लाह की निशानियों से हैं जिसने हज्ज या उमरा किया उस पर उनके तवाफ़ में गुनाह नहीं और जो शख्स नेक काम करे तो बेशक अल्लाह बदला देने वाला जानने वाला है।

أَبْدَأُ بِمَا  
بَدَأَ اللَّهُ بِهِ إِنَّ الصَّفَا  
وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ  
اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ  
أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ  
عَلَيْهِ أَنْ يَطُوفَ بِهِمَا  
وَمَنْ تَطَوَّقَ خَيْرًا فَاتَّ  
اللَّهُ شَاكِرًا عَلَيْهِمْ ط

## दर्मियाने सर्ई की दुआ

तर्जमा :- ऐ परवरदिगार बख़्शा और रहम कर और दर गुज़र कर उस से जिसे तू जानता है। और तू उसे जानता है जिसे हम नहीं जानते। बेशक तू इज़्जत व करम वाला है ऐ अल्लाह तू इसे हज्जे मबरुर कर और सर्ई मशकूर कर

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ  
وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ وَتَعْلَمُ  
مَا لَا نَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ  
الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ اللَّهُمَّ  
اجْعَلْهُ حَجًّا مَبْرُورًا وَسَعْيًا  
مَشْكُورًا وَذَنْبًا  
مَغْفُورًا اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي  
وَلِوَالِدِيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ

और गुनाह बख्श, ऐ अल्लाह मुझ को और मेरे वालिदैन और जमीअ मोमिनीन व मोमिनात को बख्श दे। ऐ दुआओं के कुबूल करने वाले ऐ रब हम से तू कुबूल कर बेशक तू सुनने वाला जानने वाला है और हमारी तौबा कुबूल कर ले बेशक तू तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है ऐ रब तू हम को दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भलाई दे और हम को अज़ाबे जहन्नम से बचा।

وَالْمُؤْمِنَاتِ يَا مُجِيبَ  
الدَّعَوَاتِ رَبَّنَا تَقَبَّلْ  
مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ  
الْعَلِيمُ وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ  
أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ  
رَبَّنَا إِنِّي فِي الدُّنْيَا  
حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ  
حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ  
النَّارِ ط

## दोनों मील से गुज़र कर पढ़ने की दुआ

तर्जमा :- अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नही दर आँ हालां कि वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है उसी के लिए

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ  
وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ  
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ  
يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ  
حَيٌّ لَا يَمُوتُ



हम्द है वो ज़िन्दगी और मौत देता है और वो ऐसा हय्यु है कि उसको कभी मौत नहीं उसी के कब्जे में सारी भलाई है और वो हर चीज़ पर कादिर है।

بِيَدِ الْخَيْرِ وَهُوَ  
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ  
قَدِيرٌ

## तवाफ़ की नियत की दुआ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह बेशक मैं तेरे बुजुर्ग घर के तवाफ़ की नियत कर रहा हूँ पस इस को मेरे लिए आसान कर और मेरी तरफ़ से इस को कुबूल फ़रमा सात चक्कर तवाफ़े हज्ज का या उमरा का खास अल्लाह तआला के लिए जो इज़्ज़त-ने जलाल वाला है।

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ طَوَافَ  
بَيْتِكَ الْحَرَامِ  
فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَسِّمَهُ  
مِثْلِي سَبْعَةَ أَشْوَاطٍ  
طَوَافِ الْحَجِّ أَوِ الْعُمْرَةِ  
بِذَلِكَ تَعَالَى عَزَّ وَجَلَّ

## दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे अब्वल

तर्जमा :- अल्लाह पाक है और सारी तअरीफ़ें अल्लाह

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ  
لِلَّهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ

के लिए हैं और कोई कूव्वत-  
 १ ताक़त नहीं मगर अल्लाह  
 बुलन्द-ने बुजुर्ग की मदद से  
 और रहमते कामिला और  
 सलाम नाज़िल हो अल्लाह  
 के रसूल पर अल्लाह की  
 रहमतें और सलाम है उन  
 पर, ऐ अल्लाह मैं तुझ से  
 सुवाल करता हूँ मुआफ़ी और  
 आफ़ियत और दाइमी मुआफ़ी  
 का दीन में और दुनिया व  
 आख़िरत में और कामयाबी  
 का जन्नत से और नजात का  
 दोज़ख़ से।

إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ  
 وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ  
 عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى  
 اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
 اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ  
 وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ  
 السَّائِمَةَ فِي الدِّينِ  
 وَالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ  
 وَالْقَوْلَ بِالنَّجَاتِ  
 وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ ط

## या मुन्दर्जा ज़ेल दुआ पढ़े।

तर्जमा :- ऐ हमारे रब हमको  
 दुनिया और आख़िरत में नेकी  
 अता फ़रमा और अज़ाबे नार  
 से बचा और हम को नेकों के  
 साथ जन्नत में दाख़िल फ़रमा।  
 ऐ ग़ालिब ऐ बख़्शिश फ़रमाने  
 वाले, ऐ जहानों के पालने  
 वाले।

رَبَّنَا إِنَّا  
 فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَ  
 فِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ  
 وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ  
 وَأَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ  
 مَعَ الْأَنْبِيَاءِ عَزِيزِ الْعِقَادِ  
 يَا رَبِّ الْعَالَمِينَ ط

## दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे दोयम

तर्जमा :- ऐ अल्लाह बेशक ये घर तेरा घर है और हरम तेरा हरम है और अमन तेरा ही अमन है। और मैं तेरा ही बन्दा हूँ और तेरे बन्दे का बेटा हूँ। और ये मक़ाम तेरे साथ जहन्नम से पनाह मांगने वाले का है। हमारे गोशत और हमारे जिस्म को जहन्नम पर हराम फ़रमा दे। ऐ अल्लाह ईमान को हमारा महबूब बनादे और उससे हमारे दिलों को मुज़य्यन कर दे और कुफ़्र और फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को हमारे लिए ग़ैर पसन्दीदा बना और हम को हिदायत पाने वालों में से कर दे। ऐ अल्लाह मुझे अपने अज़ाब से बचा जिस दिन कि तू अपने बन्दों को मबऊस फ़रमाएगा। ऐ अल्लाह अता

اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا  
الْبَيْتَ بَيْتِكَ وَالْحَرَمَ  
حَدْمُكَ وَالْأَمْنَ  
أَمْنُكَ وَأَنَا عَبْدُكَ  
وَابْنُ عَبْدِكَ وَهَذَا  
مَقَامُ الْعَابِدِ  
مِنْ النَّارِ فَحَرِّمْ  
لِحُومِنَا وَبَشِيرَتَنَا  
عَلَى النَّارِ اللَّهُمَّ حَبِّبْ  
إِلَيْنَا الْإِيمَانَ وَزَيِّنْهُ  
فِي قُلُوبِنَا وَكَرِّهْ  
إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ  
وَالْعِصْيَانَ وَاجْعَلْنَا  
مِنَ الرَّاشِدِينَ اللَّهُمَّ  
قِنِي مِنْ عَذَابِكَ  
يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ  
اللَّهُمَّ ارزُقْنِي الْجَنَّةَ  
بِغَيْرِ حِسَابٍ

कर मुझे जन्नत बिगौर हिसाब  
के।

## दुआ-ए-तवाफ़ बराए सोएम

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मैं तुझ  
से पनाह मांगता हूँ शक और  
निफ़ाक़ और शिकाक़ से और  
वापसी की बदहाली और माल  
या अहल या अवलाद में कोई  
बुरी हालत नज़र आने से। ऐ  
अल्लाह मैं तुझ से तेरी रिज़ा  
मांगता हूँ और जन्नत और  
पनाह मांगता हूँ तेरे ग़ज़ब  
और जहन्नम से। ऐ अल्लाह  
मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ  
फ़क्र से और पनाह मांगता हूँ  
ज़िन्दगी और मौत के फ़ितना  
से।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ  
بِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالنِّفَاقِ  
وَالشَّقَاقِ وَسَوْءِ الْمُنْظَرِ  
وَالْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ  
وَالْأَهْلِ وَالْوَالِدِ  
اللَّهُمَّ إِنِّي  
أَسْأَلُكَ رِضَاكَ  
وَالْجَنَّةَ وَأَعُوذُ بِكَ  
مِنْ سَخَطِكَ وَالنَّارِ. اللَّهُمَّ  
إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ  
وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ  
الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ۔

## दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे चहारुम

तर्जमा :- ऐ अल्लाह इस हज्ज  
को हज्जे मबरुर कर और  
सई मशकूर कर और गुनाह

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ  
حَجًّا مَبْرُورًا وَسَعِيًّا  
مَشْكُورًا وَذَنْبًا

को मगफूर कर और अमले सालेह को मकबूल कर और ऐसी तिजारत कि कभी नुकसान न लाए। ऐ सीनों के भेदों को जानने वाले मुझे अंधेरो से नूर की तरफ निकाल। ऐ अल्लाह मैं तुझ से सुवाल करता हूँ, उन चीजों का जो तेरी रहमत की मुस्तहिक बनाने वाली हैं और तेरी मगफिरत के पुख्ता वअदों का और हर गुनाह से सलामती का और हर नेकी से गनीमत का और कामयाबी का जन्नत के ज़रिअे और दोज़ख से नजात का ऐ रब मुझे क़ानेअ बना उन चीजों पर जो तूने मुझे दीं और बरकत दे मुझे उन में जो मुझे अता कीं और खलीफ़ा हो जा अपनी तरफ से ख़ैर के साथ उन पर जो मुझ से गाएब हैं।

مَغْفُورًا أَوْ عَمَلًا  
صَالِحًا مَقْبُولًا وَتِجَارَةً  
لَنْ تَبُورَ طِبَاعًا لِي  
مَا فِي الصَّدُورِ أَخْرَجَنِي  
يَا اللَّهُ مِنَ الظُّلُمَاتِ  
إِلَى النُّورِ اللَّهُمَّ إِنِّي  
أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ  
رَحْمَتِكَ وَعَزَائِعَ  
مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ  
مِنْ كُلِّ إِثْمٍ وَالْغَنِيمَةَ  
مِنْ كُلِّ بَرٍّ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ  
وَالنِّجَاةَ مِنَ النَّارِ  
رَبِّ قَنِّعْنِي بِمَا رَزَقْتَنِي  
وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَنِي  
وَاحْلُفْ عَلَيَّ كُلَّ  
غَائِبَةٍ لِي مِنْكَ  
بِخَيْرٍ-

## दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे पजुंम

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मुझे अपने अर्श के साए में जगह दे। जिस दिन तेरे अर्श के साए के कोई साया न होगा और तेरी ज़ाते करीम के सिवा कोई बाक़ी न रहेगा। और मुझे अपने नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हौज़ से सैराब फ़रमा ऐसा शरबत जो रचता पचता कि उसके बाद मैं कभी प्यासा न रहूँ ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ उस भलाई का जिसका सुवाल तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तुझ से किया और पनाह मांगता हूँ तुझ से हर उस बुराई से जिस से तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुझसे पनाह मांगी।

اللَّهُمَّ أَظِلَّنِي  
تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ  
يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّكَ  
عَدْنِكَ وَلَا بَاقِيَ  
إِلَّا وَجْهَكَ وَاسْقِنِي  
مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ  
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَ  
سَلَّمَ شَرْبَةَ هَيْئَةٍ  
مَرِيئَةٍ لَا أَظْمَأُ  
بَعْدَهَا أَبَدًا، اللَّهُمَّ  
إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ  
مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ  
مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ  
وَسَلَّمَ وَأَعُوذُ بِكَ  
مِنْ شَرِّ مَا سَأَعَاذُكَ  
مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى  
اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ  
الْجَنَّةَ وَنَعِيمَهَا  
وَيُقَرِّبُنِي إِلَيْهَا  
مِنْ قَوْلٍ أَوْ فِعْلٍ

ऐ अल्लाह मैं तुझ से जन्नत की नेअमत्तों का सुवाल करता हूँ और करीब कि मुझे जन्नत की तरफ कौल, फ़ेअल-ने अमल से।

أَوْعَمَلٌ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ  
وَمَا يُقَرِّبُنِي إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ أَوْ  
فِعْلٍ أَوْ عَمَلٍ

## दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे शशुम

तर्जमा :- ऐ अल्लाह बेशक मुझ पे तेरे बहुत से हुक्क हैं और मेरे और तेरी मखलूक के दर्मियान बहुत से हुक्क हैं। ऐ अल्लाह उन में से जो हुक्क कि तेरे हैं उनको मुआफ़ फ़रमा और जो तेरी मखलूक के हुक्क हैं। उन को मुझ से उख दे, और मुझे अपने हलाल के ज़रिअे हराम से बे परवाह कर दे। और अपनी ताअत के ज़रिअे मुसीबत से और अपने फ़ज्ज के ज़रिअे अपने मासिवा से ऐ वसीअ मग़फ़िरत वाले ऐ अल्लाह बेशक तेरा घर अज़ीम है और तेरी ज़ात

اللَّهُمَّ إِنَّ لَكَ  
عَلَى حَقُّوقًا كَثِيرَةً  
فِي مَا بَيْنِي وَبَيْنَكَ  
وَحَقُّوقًا كَثِيرَةً فِي مَا  
بَيْنِي وَبَيْنَ خَلْقِكَ  
اللَّهُمَّ مَا كَانَ لَكَ  
مِنْهَا فَاعْفُ عَنِّي وَمَا  
كَانَ لِي خَلْقِكَ فَحَمَلَهُ  
عَنِّي وَأَعِزَّنِي بِحَدِّكَ  
عَنْ حَرَامِكَ  
وَبِطَاعَتِكَ عَنِ  
مَعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ  
عَنْ سَوْأِكَ  
يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ  
اللَّهُمَّ إِنَّ بَيْتَكَ  
عَظِيمٌ وَوَجْهَكَ كَرِيمٌ

हलीम-ने करीम और बुजुर्ग है  
मुआफ़ी को पसंद फ़रमाता है  
बस मुझे मुआफ़ फ़रमा।

وَأَنْتَ يَا اللَّهُ حَلِيمٌ كَرِيمٌ  
عَظِيمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ  
فَاعْفُ عَنِّي۔

## दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे हफ़्तुम

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मैं तुझसे  
मांगता हूँ ईमाने कामिल, यकीने  
सादिक और रिज़क कुशादा  
और डरने वाला दिल और  
ज़िक्र करने वाली ज़वान और  
हलाल तय्येब और ख़ालिस  
तौबा और मौत से पहले तौबा  
और मौत के वक़्त राहत और  
माफ़िरत-ने रहमत बादे मौत,  
और मुआफ़ी वक़्ते हिसाब  
और कामयाबी जन्नत के साथ  
और निजात दोज़ख़ से तेरी  
रहमत के साथ ऐ ग़ालिब,  
और ऐ बख़्शाने वाले। ऐ मेरे  
रब मेरा इल्म ज़्यादा कर  
और मुझे नेकों में शामिल  
फ़रमा।

اللَّهُمَّ إِنِّي  
أَسْأَلُكَ إِيمَانًا كَامِلًا  
وَيَقِينًا صَادِقًا  
وَرِزْقًا وَاسِعًا وَقَلْبًا  
خَاشِعًا وَلسَانًا ذَلِيلًا  
وَرُفْقًا حَلَالًا لَطِيمًا وَتَوْبَةً  
نَصُوحًا وَتَوْبَةً قَبْلَ  
الْمَوْتِ وَرَاحَةً عِنْدَ الْمَوْتِ  
وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً  
بَعْدَ الْمَوْتِ وَعَفْوَ  
عِنْدَ الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ  
بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ  
مِنَ السَّاءِرِ بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيزُ  
يَا عَفُوًّا رَبِّ بَرِّدْ فِي عِلْمِي  
وَالْحَقْنِي بِالصَّالِحِينَ ۝



# सलाम ब बारगाहे खैरुल अनाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

अज़ :- अअूला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान फ़ाज़िले  
बरेलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम  
शम्अे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम  
मुहरे चर्खे नुबूव्वत पे रौशन दुरुद  
गुले बागे रिसालत पे लाखों सलाम  
शहरे यारे इरम ताजदारे हरम  
नव बहारे शफ़ाअत पे लाखों सलाम  
शबे असरा के दूल्हा पे दाएम दुरुद  
नौश-ए-बज़्मे जन्नत पे लाखों सलाम  
खल्क के दाद रस सब के फ़रियाद रस  
कहफ़े रोज़े मुसीबत पे लाखों सलाम  
हम ग़रीबों के आक्रा पर बेहद दुरुद  
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम  
जिसके आगे सरे सरवराँ ख़म रहें  
उस सरे ताजे रिफ़ाअत पे लाखों सलाम  
जिसके माथे शफ़ाअत का सेहरा रहा  
उस ज़बीने सआदत पे लाखों सलाम

जिसके सज्दे को महराबे कअबा झुकी  
 उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम  
 जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया  
 उस निगाहे अेनायत पे लाखों सलाम  
 जिस से तारीक दिल जगमगाने लगे  
 उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम  
 वो दहन जिस की हर बात वहीए खुदा  
 चश्म-ए-इल्म-ने हिकमत पे लाखों सलाम  
 वो ज़बाँ जिस को सब कुन की कुंजी कहें  
 उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम  
 जिनकी तसकीं से रोते हुए हँस पड़े  
 उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम  
 जिसको बारे दुआलम की परवाह नहीं  
 ऐसे बाजू की कूव्वत पे लाखों सलाम  
 कुल जहाँ मिल्लक और जौ की रोटी गिज़ा  
 उस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम  
 पहले सज्दा पे रोज़े अज़ल से दुंरुद  
 यादगारी-ए-उम्मत पे लाखों सलाम  
 सय्येदा ज़ाहिरा तय्येबा ताहिरा  
 जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम  
 अह्ले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़  
 बानुवाने तहारत पे लाखों सलाम  
 बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी  
 उस हरीमे बराअत पे लाखों सलाम

साय - ए - मुस्तफ़ा माय - ए - इस्तफ़ा  
 इज़्ज़-ने नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम  
 यानी उस अफ़ज़लुल ख़ल्क बादरुसुल  
 सानियसनैने हिजरत पे लाखों सलाम  
 अस्दकुत्सादकीं सय्येदुल मुत्तकीं  
 चश्म-ो गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम  
 वो उमर जिस के अअ़दा पे शैदा सक़र  
 उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम  
 तर्जमाने नबी हम ज़बाने नबी  
 जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम  
 ज़ाहिदे मस्जिदे अहमदी पे दुरुद  
 दौलते जैशे इशरत पे लाखों सलाम  
 यानी उस्मान साहिब क़मीसे हुदा  
 हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम  
 मुर्तज़ा शेरे हक़ अशजउल अशजईन  
 साक़ी-ए-शीरो शरबत पे लाखों सलाम  
 शेरे शमशीरे ज़न शाहे ख़ैबर शिकन  
 पर्वे दस्ते कुदरत पे लाखों सलाम  
 शाफ़ई, मालिक, अहमद इमामे हनीफ़  
 चार बागे इमामत पे लाखों सलाम  
 ग़ौसे अअ़ज़म इमामुत्तुका वन्नुका  
 जलव-ए-शाने कुदरत पे लाखों सलाम  
 जिसकी मिंवर हुई गरदने अवलिया  
 उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रहमत पे दअूवा - नहीं  
 शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम  
 काश महशर में जब उनकी आमद हो और  
 भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम  
 मुझ से खिदमत के कुदसी कहें हॉ रज़ा  
 मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

## गज़ल कि दरबार-ए-अज़मे सफ़रे अतहर मदीना मुनव्वरा अज़ मक्का मुअज़ज़मा

अज़ :- अज़ूला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले  
 बरेलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु

हाजियो आओ शहंशाह का रौज़ा देखो  
 कअूबा तो देख चुके कअूबा का कअूबा देखो  
 रुकने शामी से मिटी वहशते शामे गुर्बत  
 अब मदीना को चलो सुब्हे दिल आरा देखो  
 आवे ज़मज़म तो पिया ख़ूब बुझाई प्यासें  
 आओ जूदे शहे कौसर का भी दरिया देखो  
 जेरे मीज़ाब मिले ख़ूब करम के छींटे  
 अब्रे रहमत का यहाँ जोरै बरसना देखो

धूम देखी है दरे कअबा पे बेताबों की  
 उनके मुश्ताक़ों में हसरत का तड़पना देखो  
 मिस्ले परवाना फिरा करते थे जिस शम्मअ के गिर्द  
 अपनी उस शम्मअ को परवाना यहाँ का देखो  
 खूब आँखों से लगाया है गिलाफ़े कअबा  
 कस्रे महबूब के पर्दे का भी जलवा देखो  
 वाँ मुतीओं का जिगर खौफ़ से पानी पाया  
 याँ सियह कारों का दामन पे मचलना देखो  
 अक्वलीं खान-ए-हक्र की तो ज़ियाएं देखीं  
 आखरी बैते नबी का भी तजल्ला देखो  
 जीनते कअबा में था लाख उरुसों का बनाव  
 जलवा फ़रमा यहाँ कौनेन का दूल्हा देखो  
 धो चुका जुल्मते दिल बोस-ए-संगे असवद  
 खाक बोसी-ए-मदीना का भी रुतवा देखो  
 बेनियाज़ी से वहाँ काँपती पाई ताअत  
 जोशे रहमत पे यहाँ नाज़ गुनह का देखो  
 जुमअे मक्का था ईद अहले अ़बादत के लिए  
 मुजरिमो आओ यहाँ ईदे दोशंबा देखो  
 खूब मसआ में व-उम्मीदे सफ़ा दौड़लिए  
 रहे जानाँ की सफ़ा का भी तमाशा देखो  
 रक्से बिस्मिल की बहारें तो मिना में देखीं  
 दिले खूँ नाबा फ़शाँ का भी तड़पना देखो  
 गौर से सुन तो रज़ा कअबा से आती है सदा  
 मेरी आँखों से मेरे प्यारे का रौज़ा देखो

## “काश गुंबदे खिज़्रा देखने को मिल जाता”

अज़ :- जानशीने हुज़ूर मुफ़्ति-ए-अज़म मुफ़्ती मुहम्मद  
अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी

दाग़ो फ़ुरक़ते तयबा क़ल्बे मुज़महिल जाता  
काश गुंबदे खिज़्रा देखने को मिल जाता  
मेरा दम निकल जाता उनके आस्ताने पर  
उनके आस्ताने की ख़ाक में मैं मिल जाता  
मेरे दिल से धुल जाता दाग़ो फ़ुरक़ते तयबा  
तयबा में फ़ना होकर तयबा में ही मिल जाता  
मौत लेके आ जाती ज़िन्दगी मदीने में  
मौत से गले मिलकर ज़िन्दगी में मिल जाता  
खुल्दे ज़ारे तयबा का इस तरह सफ़र होता  
पीछे पीछे सर जाता आगे आगे दिल जाता  
दिल पे जब किरन पड़ती उन के सबज़ गुंबद की  
उस की सबज़ रंगत से बाग़ बन के खिल जाता  
फ़ुरक़ते मदीना ने वो दिए मुझे सदमे  
कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता  
दिल मेरा बिछा होता उनकी रहगुज़ारों में  
उन के नक्शे पा से यूँ मिल के मुस्तक़िल जाता  
दिल पे वो क़दम रखते नक्शे पा ये दिल बनता  
या तो ख़ाके पा बनकर पा से मुत्तसिल जाता

वो खिराम फ़रमाते मेरे दी-दओ दिल पर  
 दीदा में फ़िदा करता सदक़े मेरा दिल जाता  
 चश्मे तर वहाँ बहती दिल का मुद्दआ कहती  
 आह! बा अदब रहती मूँह मेरा सिल जाता  
 दर पे दिल झुका होता, इज़्ज प़ा के फिर बढ़ता  
 हर गुनाह याद आता दिल खजिल-खजिल जाता  
 मेरे दिल में बस जाता जलवा ज़ार तयबा का  
 दाग़ो फ़ुरक़ते तयबा फूल बन के खिल जातो  
 उनके दर पे अख़्तर की हसरतें हुई पूरी  
 साईले दरे अक़दस कैसे मुन्फ़इल जाता

## “उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं”

अज़ :- जानशीने हुज़ूर मुफ़्ति-ए-अअज़म मुफ़्ती मुहम्मद  
 अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी

बुल हवस सुन सीम-ने ज़र की वन्दगी अच्छी नहीं  
 उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं  
 सरवरी क्या चीज़ है उनकी गदाई के हुज़ूर  
 उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं  
 उनका चौखट चूमकर खुद कह रही है सरवरी  
 उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

सरवरी खुद है भिकारन बन्दगाने शाह की  
 उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं  
 सरवरी पाकर भी कहते हैं गदायाने हुज़ूर  
 उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं  
 ताजे खुद रा कासा करदा गोयद ईजा ताजवर  
 उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं  
 ताज को कासा बनाकर ताजवर कहते हैं यूँ  
 उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं  
 मुफ़्त-ए-अज़म यके अज़ मर्दुमाने मुस्तफ़ा  
 इस रज़ाए मुस्तफ़ा से दुश्मनी अच्छी नहीं  
 हुज्जतुल इस्लाम ऐ हामिद रज़ा बाबा-ए-मन  
 तुम को बिन देखे हमारी ज़िन्दगी अच्छी नहीं  
 खाके तयबा की तलब में खाक हो ये ज़िन्दगी  
 खाके तयबा अच्छी अपनी ज़िन्दगी अच्छी नहीं  
 आरज़ू मन्दाने गुल कांटो से बचते हैं कहीं  
 खारे तयबा से तेरी पहलू तही अच्छी नहीं  
 दशते तयबा के फ़िदाई से जिनां का तज़किरा  
 जो रुला दे खून ऐसी दिल्लगी अच्छी नहीं  
 दशते तयबा छोड़कर मैं सैरे जन्नत को चलूँ  
 रहने दीजे शौख जी दीवानगी अच्छी नहीं  
 जो जुनूने खुल्द में कव्वों को दे बैठे धरम  
 ऐसे अन्धे शौख जी की पैरवी अच्छी नहीं  
 अक्ल चौपायों को दे बैठे हकीमे थानवी  
 मैं न कहता था कि सोहबत देव की अच्छी नहीं



यादे जानाँ में मआज़ल्लाह हस्ती की ख़बर  
 यादे जानाँ में किसी से आगही अच्छी नहीं  
 शामे हिजराँ में हमें है जुस्तुजू उस मेहर की  
 चौघवीं के चाँद तेरी चाँदनी अच्छी नहीं  
 तौके तहज़ीबे फ़रंगी तोड़ डालो मोमिनो  
 तीरगी अंजाम है ये रौशनी अच्छी नहीं  
 शाख़े गुल पर ही बनाएंगे अनादिल आशियाँ  
 बर्क़ से कह दो कि हम से ज़िद तेरी अच्छी नहीं  
 जो पिया को भाए अख़्तर वो सुहाना राग है  
 जिससे नाख़ुश हो पिया वो रागनी अच्छी नहीं

## ख़ुश ख़बरी

कंज़ुल ईमान शरीफ़ (हिन्दी)  
 शाएज़ हो गया है। इसे हासिल  
 करने के लिए  
 रज़ा एकेडमी, बम्बई-३  
 से राबता क़ाएम करें।